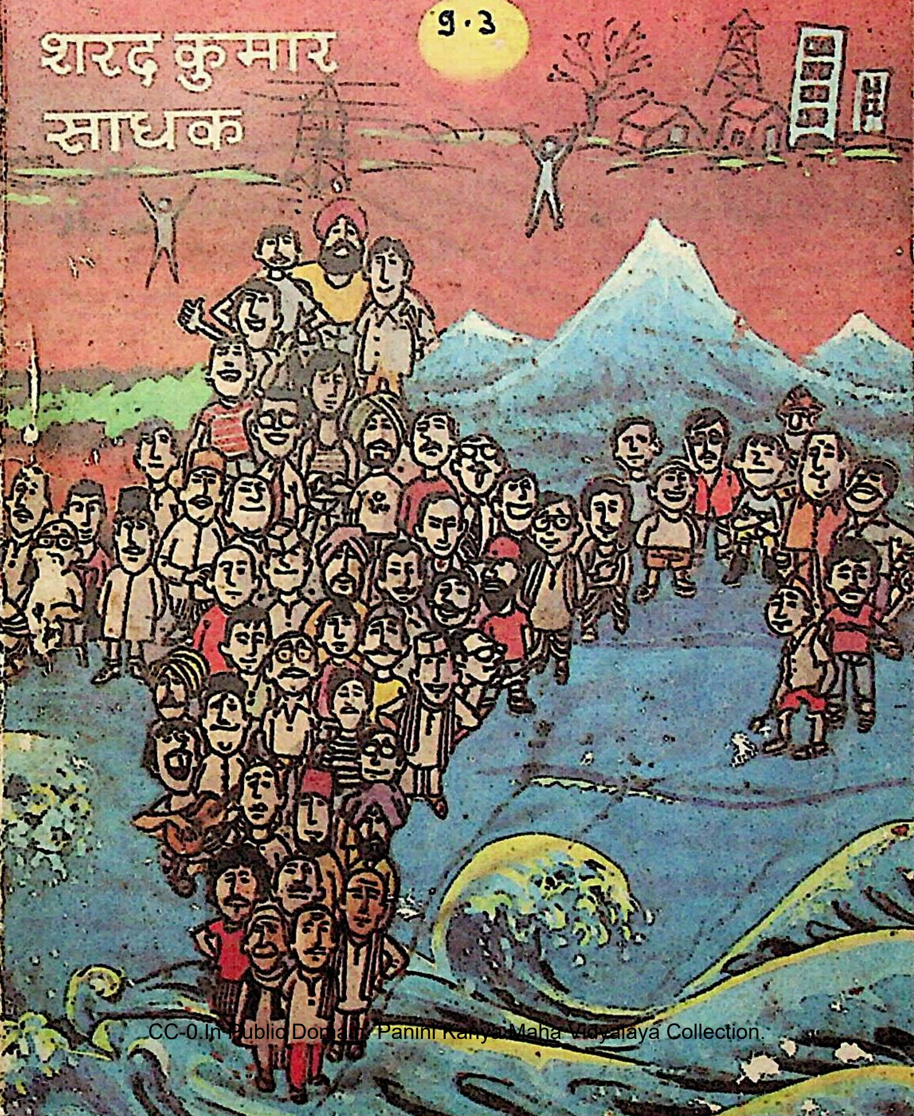
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत-दर्शन



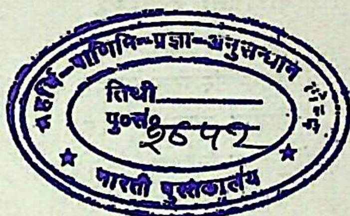
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत-दर्शन



शरद कुमार साधक



आचार्य कुल

२०।१४ कबीर नगर (दुर्गाकुण्ड)

वाराणसी २२१००५

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रकाशक
आचार्य कुल
२०/१४ कबीर नगर (दुर्गाकुण्ड)
वाराणसी २२१००५
●
प्रथम संस्करण १९८६
द्वितीय संस्करण १९८७
तृतीय संस्करण १९८८
चतुर्थ संस्करण १९९०
●
मूल्य : आठ रुपये मात्र
●
मुद्रक
तारा प्रिंटिंग वर्क्स
कमच्छा, वाराणसी
●

भारत-दर्शन में

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भारत दर्शन क्या है ?

हमारे देश के अग्रणी गांधीवादी श्री शरद कुमार साधक की लिखी हुई यह एक लघु काव्यकृति है; जिसमें कवि साधक ने आज के भारत को जैसा देखा और जैसा बनाना चाहा, भावना के धरातल पर तदनुरूप उसका एक शब्दचित्र प्रस्तुत किया है। हम उनसे सहमत नहीं भी हो सकते हैं। गांधीजी के तीन बंदरों वाले अहस्तक्षेप के सिद्धान्त से हटकर भी उन्होंने इस कृति में बहुत कुछ लिखा है। अतः हम कह सकते हैं कि उन्हें गाँधीवादी मतवाद का भी आग्रह नहीं है। ४८ पृष्ठों की यह पुस्तक सम्भवतः तटस्थ पाठकों को एक ही मूल बिन्दू पर पहुँचाती है, और वह है—करुणा। कवि मूलतः करुणा से प्रेरित है। यह करुणा कभी हमें द्रवीभूत करती है और कभी आक्रोश से उद्दीप्त। वह क्षण हमारी भावना और विचारों के निर्माण का क्षण होता है। महावीर और गौतम ने 'बहुजन हिताय' के लिये सोई हुई हमारी इसी करुणा को कभी जगाया था, जिसने सम्राट् अशोक और बाहुबली जैसे इतिहास पुरुषों का निर्माण किया। आधुनिक काल में इसी करुणा ने गाँधी का निर्माण किया।

औद्योगिक सभ्यता के विकास, व्यक्ति हित, निहित स्वार्थ, सम्पत्ति पर असीमित अधिकार, उत्पादन साधनों पर सीमित व्यक्तियों के पूर्ण अधिकार या संक्षेप में 'लाभपरक' अर्थव्यवस्था पर निर्मित विषमता-पूर्ण समाज की संरचना ने चाणक्य के शब्दों में 'मत्स्य-न्याय' या शोषणपरक समाज बनाकर भारत को एक विकृत देश में रूपान्तरित कर दिया है। २० बहुराष्ट्रिक उद्योगघराने तथा १०५ एकाधिकार-वादी घराने पूंजीपति इस देश में उत्पन्न हो चुके हैं। ६० प्रतिशत

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

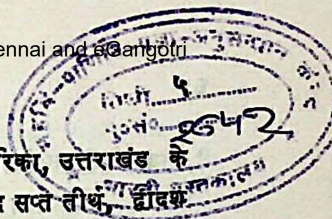
 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता निर्धनता की रेखा या आर्थिकमाप के नीचे का जीवन व्यतीत कर रही है। ८३ करोड़ की जनसंख्या में १९९० में देश की ६४ प्रतिशत जनसंख्या अशिक्षित है। युग-युग से पशुतुल्य जीवन व्यतीत करने वाले आदिवासी, हरिजन, पिछड़ी जाति के करोड़ों लोग इसी देश में रहते हैं। साढ़े सात प्रतिशत आदिवासी जनसंख्या प्रदर्शनी की वस्तु माने जाते हैं। पूरा हिंदू समाज और उसकी देखादेखी मुसलिम और ईसाई समाज, धर्मान्तरण के बाद समतापरक समाज में जाकर भी रोटी-बेटी के सम्बंधों से परे के दूरस्थ जाति या पृथक् समुदाय में बँटे हुए हैं। मुहम्मद और ईसामसीह के प्रभाव की सरिता जाति-पांत के बालू में सूख गयी। यह भी एक भारत है। अधिकार शून्य स्त्रियां पुरुष की सम्पत्ति बनी हुई हैं। पुरुष के अधिकारों की धार्मिक व्याख्या और अनुपालन ही उनके जीवन का श्रेष्ठ आदर्श है। हिन्दू संस्कृति, मुसलिम संस्कृति, ईसाई संस्कृति, में कहीं ताल मेल नहीं हैं और न हो सकने की सम्भावना है। ऐसे में अनेक लोग अतीत के किसी स्वर्णयुग का महिमागान करते हैं और कल्पना के एक मनोरम स्वर्ग में हमें ले जाकर बैठा देना चाहते हैं। वे नहीं चाहते कि हम वर्तमान के नग्न यथार्थ को देखें और उसका कोई वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करें। साधक जी आदर्शों के स्वर्ग का निर्माण करना चाहते हैं, किन्तु धरती के यथार्थ को अनदेखा करने के लिये वे प्रस्तुत नहीं हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उनको बड़ों के मीठे-मीठे शब्दों पर बहुत भरोसा नहीं है।

भारत के सम्बन्ध में उपासना, भावना, दर्शन, विचार और आचार की दृष्टि से जांचने, परखने और आगे बढ़ने के लिये साधक जी ने कई दृष्टि से विचार किया है। भारत देश, आर्यावर्त, जम्बूद्वीप, भरतखंड, हिन्दुस्तान और इंडिया की एक प्राचीन सांस्कृतिक परिकल्पना चली आ रही है जिसमें धार्मिक मान्यताओं का भी योग

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है। कैलाश, मानसरोवर, अमरनाथ, पुष्कर, द्वारिका, उत्तराखंड के अनेक स्थल, पशुपतिनाथ, कामरूप, रामेश्वर आदि सप्त तीर्थ, द्वादश ज्योतिर्लिंग एवं पौराणिक मान्यताओं से भिन्न जैन, बौद्ध और अवान्तर महत्वपूर्ण स्थल उसमें जुट गये हैं। धार्मिक दृष्टि से भारत के विभिन्न अंचलों में पुरुष एवं स्त्री देव शक्तियों की—विभिन्न मत-मतान्तरों में समन्वय स्थापित करने वाली सर्वांगीण या उदार उपासना पद्धति अपनी आंचलिक प्रधानता में भी भारतीय बनी रही और किसी न किसी रूप में भारत की बहुसंख्यक जनता को वर्णाश्रमगत विभाजन तथा मंदिर अप्रवेश एवं वेद के अनध्ययन की स्थिति में भी कम या अधिक बांधती रही। बहुसंख्यक समाज धार्मिक-अनुष्ठान, तीर्थयात्रा या धार्मिक मान्यताओं से बाहर था, किन्तु कर्मकाण्ड, आस्था या प्रचार के स्तर पर अथवा सामाजिक अधिरचना में स्वामियों या सामंतों के माध्यम से किसी स्तर पर उसका स्थान निर्धारित कर उसे भी धर्म की बाहरी सीमा में बांध दिया गया था, क्योंकि सोमनाथ, विश्वेश्वर, अयोध्या, मथुरा आदि के मंदिर उसी उपेक्षित, शोषित बहुसंख्यक समाज ने बनाये थे और वही अपने श्रम से उन्हें चलाता भी था। यद्यपि मंदिर के भीतर से उसका संबंध नहीं था, तथापि सभी मंदिर उसी के कंधे पर टिके थे, यह भी एक भारत है। मंदिर के अन्दर स्थापित प्रस्तर प्रतिमा की अज्ञात देवशक्ति से वह बंधा हुआ था।

इस वैदिक या पौराणिक धर्म में बड़ी शक्ति थी। गोकि उसने बड़े-बड़े अत्याचार किये, किन्तु उसके मुख पर करुणा, कल्याण, लोकहित का चमकता हुआ मुखड़ा बराबर चढ़ा हुआ था। कालान्तर में उसे शिव, राम, कृष्ण, दुर्गा, सरस्वती, गणेश, हनुमान जैसे लोकरक्षक व्यक्तित्व भी सुलभ हो गये, जिससे धर्म के भीतर छिपे अधर्म को ढकने में बड़ी सहायता मिली। पूर्व जन्म के कर्म तथा भाग्यवाद के दर्शन ने तो मनुष्य की जिज्ञासा को भी समाप्त कर दिया। जो कुछ

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, सब निश्चित है। यदि सामान्यजन दुखी होता है और मरता है, तो राजा, महाराजा, महापुरुष, अवतार एवं देवी-देवता भी दुखी होते हैं और मरते हैं। साधारण जन को ऐसे में दुखी होने या संघर्ष करने की आवश्यकता ही समझ में नहीं आयी। हजारों वर्ष वीत गये। इस भारत की महिमा का गान अनेक गायकों ने किया है। कुछ के लिये तो यही भारत महान है। इस प्रकार के भारत को महान कहने या समझने वाले लोग रहते इसी संसार में हैं, किन्तु बातें किसी अवान्तर लोक की करते हैं, जो जीवन को न कभी प्राप्त हुआ और न कभी प्राप्त हो सकेगा। उनके लिये भावना के भारत का ही महत्व है।

धार्मिक जनों के अतिरिक्त एक दूसरा भारत इतिहासकारों ने बनाया है। कभी इंग्लैण्ड में (सागर की लहरों के शासक, आधे विश्व के शासक, अपने शासन और साम्राज्य में सूर्यास्त न देखने वाले इंगलैण्ड में) बच्चों को सिखाया जाता था कि हर अंग्रेज बच्चा शासन करने के लिए पैदा होता है। उन्होंने शेष विश्व को असभ्य कहा। भारत को भी असभ्य कहा। सबको सभ्य बनाने का अधिकार स्वयं ग्रहण कर लिया और भारत का इतिहास लिखकर बताया कि यहाँ सदा से असभ्य लोग रहते आये हैं। आर्य बाहर से—पश्चिम से—आये। यहाँ आकर उन्होंने विकास किया और यत्र-तत्र सभ्यता का निर्माण किया। मैकाले ने पूर्णाहुति करते हुए लिखा कि भारत की सारी अच्छी पुस्तकें एक छोटी-सी आलमारी में रखी जा सकती हैं। अनेक इतिहासकार आज भी भारत को इसी दृष्टि से देखते हैं। नेहरू विचार के साहित्यकार मुहम्मद गोरी से बहादुर शाह जफर के युग के इतिहास को ही असली इतिहास मानते हैं। भूल-चूक से वे कभी बुद्ध और कभी अशोक या हर्ष को देख लेते हैं। सन् १९४७ के भारत को नेहरू-विचार के इस इतिहास को भी झेलना पड़ा, जिसका दुष्परिणाम आज

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी भारत को पीस रहा है और आगे भी पीसेगा। इस देश में दूसरे प्रकार के भी अन्धे हैं, जो देश को पराधीनता और पतन के गर्त में धकेलने वाले पृथ्वीराज, परमर्दि और जयचन्द की प्रशस्ति में गर्व का अनुभव करते हैं तो कुछ लोग जनेऊ पहनने, टीका लगाने, मन्दिर में जाने और अन्ततः मुस्लिम का मुस्लिम बना रहकर मीनाबाजार लगाने, बलपूर्वक आत्मसात करने की धमकी देकर राजपूतों की बेटियों से अगणित विवाह रचाने वाले अकबर और कन्धा लगाकर आगरा के किले तक विवाह के लिए अपनी बहनों व बेटियों को पालकी में पहुँचाने वाले तथाकथित वीर राजपूतों की ऊँची मूँछ भी वीर गाथाओं ? को भी इतिहास मानते हैं। यह भारत है !

विश्व के किसी भी एक देश की तुलना में कहीं अधिक और श्रेष्ठ साहित्य का सृजन, दर्शन का विकास, ललित कलाओं का उत्थान, शासन के श्रेष्ठ आदर्शों की स्थापना, विश्वजनीन मानवीय आदर्शों का विकास, हजारों महापुरुषों का जन्म और उनकी मानव सेवा, प्राकृतिक विज्ञान के विकास ने भारत की निरपेक्ष महत्ता को विश्व इतिहास में स्थापित कर दिया है। अनेक भारत प्रेमी सब कुछ को विस्मृत कर इस श्रेष्ठ चित्र को ही भारत मानते हैं और उसपर गर्व करना चाहते हैं। यह भी एक भारत है।

इतिहास पढ़ने का एक और दृष्टिकोण सामने आ गया है और वह है द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का दृष्टिकोण। इतिहास का निर्माता श्रम होता है। किसानों और श्रमिकों ने ही भारत के वास्तविक इतिहास का निर्माण किया है। राजाओं का इतिहास देश का इतिहास नहीं बनता। उनकी दिनचर्या, अपहरण और बलात्कार की कथा, जनता को लूटकर एक-दो मन्दिर बनवाने या उसमें देवदासियों को भरने अथवा विजय स्तम्भ खड़ा करने की कथा किसी देश का इतिहास नहीं हुआ करती। शोषक वर्ग का शासन और शोषित वर्ग का समाज

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास के लिए किया गया संघर्ष और रचनात्मक कार्य ही किसी देश का इतिहास होता है। इसी वर्ग ने शस्त्र बनाये, मन्दिर और देवता बनाये, राजमुकुट और राजप्रसाद बनाये, राजमार्ग और राजरथ बनाये, मस्जिद और गुरुद्वारे बनाये। सभ्यता, संस्कृति और ग्रन्थ भी बनायें। तो, इसी वर्ग का इतिहास देश का इतिहास है। यही वर्ग पहले भारत था, आज भी यही भारत है, कल का भारत भी यही वर्ग होगा।

इस वर्ग के इतिहास ने सामाजिक मनोविज्ञान में एक मोड़ उत्पन्न किया है। करुणा का स्थान क्रोध को—सामाजिक क्रोध को प्रदान कर दिया है। करुणा एक नपुंसक भाव है। उसमें आंसू गिराने, आत्मीयता प्रकट करने, हाथ-पांव पटकने के अतिरिक्त कोई शक्ति नहीं होती। यही कारण है कि महावीर, बुद्ध और गाँधी की करुणा कोई सामाजिक परिवर्तन न कर सकी। उत्पीड़कों, शोषकों, सामन्तों, पूंजीपतियों अथवा इतर सामाजिक अपराधियों का उन्मूलन न कर सकी और नहीं कर सकती है।

इतिहास के इस प्रयोगात्मक निषेध निष्कर्ष के आलोक में वर्ग संघर्ष अंगद का पैर जमा रहा है। बहरहाल अहिंसा की खेती करने वाले इस देश में बन्दूक की जोरदार फसल उगने लगी है। गांधीवादी कवि उसे देख रहा है लेकिन खेद की बात है कि वह उसे लाचारी से देख रहा है।

साम्प्रदायिक सद्भाव की कमी भी भारत की एक समस्या है। यह कमी वर्गों को तोड़ती है और मार्क्सवाद को अर्थहीन बना देती है। कारखाने में एक ही काम करने वाले श्रमिक, कार्यालय में एक ही कार्य करने वाले लिपिक, विद्यालयों में एक ही विषय का अध्यापन करने वाले अध्यापक, खेती या कारीगरी का एक ही कार्य करने वाले एक ही वर्ग के हिन्दू, मुसलमान साम्प्रदायिकता के चलते तब दो हो

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते हैं। भारत में साम्प्रदायिक सद्भाव पैदा कर हिन्दू-मुसलमान को आदमी और भारतीय बनाने का प्रयत्न करने के लिए गाँधी ने विश्व इतिहास की धारा के विरुद्ध घोर प्रतिक्रियावादी खिलाफत आन्दोलन का समर्थन किया और तुर्की की जनता की भावना के विरुद्ध खलीफा के पद की रक्षा के लिए आन्दोलन भी चलाया, किन्तु उन्हें उर्दू का संग्राम, पाकिस्तान का निर्माण, हिन्दू-मुस्लिम का नरसंहार, करोड़ों हिन्दुओं का बलात् धर्मान्तरण, लाखों हिन्दू स्त्रियों का अपहरण, नोआखली में उनपर मुसलमानों का सांघातिक आक्रमण आदि सब कुछ झेलना पड़ा। साम्प्रदायिक एकता अर्थात् 'हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई' का सिद्धान्त इतिहास में बहुत बड़ी असफलता और क्रूर व्यंग्य बनकर रह गया है।

मुस्लिम संस्कृति की विसंगतियों को इतिहास में देखे बिना कोई किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकता। भारत में सुल्तान युग में कुल ३५ सुल्तानों के सिर उनके ही भाई-भतीजों और बेटों द्वारा काटे गये। मुगल वंश में हुमायूं ने भाई कामरान की आँखों में जल्लाद से सूजा डलवा दिया और गला अलग करवा दिया। शाहजहाँ ने अपने भाई नूरजहाँ के दामाद शहरयार की आँखें निकलवायीं। औरंगजेब ने तीन भाइयों को मारकर अपने बाप को भी गिरफ्तार कर लिया। सर सैयद ने हिन्दुओं से हाथ मिलाने से इन्कार कर दिया। वही काम आगे चलकर इकबाल और जिन्ना ने किया। खिलाफत आन्दोलन चलाने वाले गाँधी जैसे महापुरुष को मोहम्मद अली ने 'अदने से अदने मुसलमान से भी निम्न' कोटि का बताया। पाकिस्तान के कई प्रधान मन्त्री और बंगलादेश के कई राष्ट्रपति कत्ल कर दिये गये। मुस्लिम संस्कृति के रक्षकों ने भारत में अनेक ग्रन्थों, ग्रन्थालयों और कला-कृतियों को नष्ट कर जला दिया। १९४८ में काले पत्थरों से बने विश्व को श्रेष्ठ कला के परिचायक वारंगल (आन्ध्र) के दुर्ग और

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू राजप्रासाद को निजाम के रजाकारों ने स्वतन्त्र भारत में भूलुण्ठित कर दिया। १९४७ में पाकिस्तान (बंगलादेश सहित) की जनसंख्या ६ करोड़ थी। ३.५० करोड़ मुसलमान, २.५० करोड़ हिन्दू। १९९० में जब हिन्दुओं की जनसंख्या ६.१५ करोड़ होनी चाहिए थी, तब वह घटकर १.२५ करोड़ ही रह गयी है। शेष कहाँ गये? इसका उत्तर कोई पंडित नेहरू ही दे सकता है। पूरे काश्मीर के तीन खण्ड हैं—लद्दाख बौद्ध बहुल है, जम्मू हिन्दू बहुल है और काश्मीर मुस्लिम बहुल। केवल काश्मीर में ही उपद्रव है, अन्यत्र नहीं। भारत खण्ड में लगातार हिंसा जारी है। इस वैज्ञानिक युग में सलमां रुशदी नामक लेखक को कुरान पर टीका-टिप्पणी लिखने के कारण मौत की सजा सुना दी गयी! आज भी रुशदी बन्दूक की साया में जी रहा है। टीका-टिप्पणी लिखना चिन्तन है। ज्ञान का विकास है। मनुष्य का परिष्कार है। इसमें हानि क्या है? इससे सत्य का स्वरूप निखरता है।

उर्दू में भारतीय इतिहास, पुराण, दर्शन, जीवन-साहित्य के नाम पर कुछ भी नहीं है, किन्तु मात्र अरबी लिपि के कारण मुसलमान उसके लिये लड़ रहे हैं। उर्दू का झंडा ऊँचा करने वाले ये मुसलमान स्वयं मुस्लिम सूफी कवियों का साहित्य नहीं पढ़ते। जायसी, रहीम, रसखान, तेगअली को नहीं पढ़ते, क्योंकि उनमें भारतीय जीवन का प्रभाव आ गया है। एक प्रकार की संकीर्ण सांस्कृतिक परम्परा ने पूरे मुस्लिम सम्प्रदाय को चिंतन शून्य और विवेक शून्य बना कर रख दिया है, जिसके दुराग्रह को कुछ मूर्ख राजनीतिज्ञ किसी न किसी आड़ में बढ़ावा देते रहे हैं। इस चिंतनशून्य दुराग्रह पूर्ण संस्कृति ने सारे वैज्ञानिक और उदार आधुनिक दर्शन को निरर्थक बना कर रख दिया है, जिसे हम झेल रहे हैं। यह भी भारत का एक चित्र है। इसे देखना होगा और बुद्धिसंगत समाधान खोजना पड़ेगा।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित नेहरू के शासन काल में देखते-देखते साम्राज्यवाद की अगली सैनिक चौकी के रूप में कार्यरत ईसाई मिशनरियों ने भारत के पूर्वांचल तथा बिहार, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र के जंगलों और पहाड़ों के आदिम क्षेत्रों में डेरा डाल दिया। स्कूल, अस्पताल और रोटी की सुविधा प्रदान कर आदिम जातियों को आधुनिक समाज से जोड़ा। उन्हें अंग्रेजी पढ़ायी। ईसाई बनाया और बताया कि भारत अर्थात् इंडिया उनका देश नहीं है। वह नेहरू का है। तब आदिवासियों ने अंग्रेजी में कहा—'वे पूर्ण स्वतंत्र हैं और भारतीय संविधान को नहीं मानते।' नेहरू की उदारता और ईसामसीह की उदारता के फलस्वरूप अब इन जंगल और पहाड़ के दूर दूरस्थ निवासियों के हाथ में बंदूक, मुंह में अंग्रेजी, दिमाग में स्वतन्त्रता का मंत्र हैं—यह भी भारत का का एक चित्र है।

हीगल की भाँति सदा सिर के बल खड़े होने और चलने वाले पंडित नेहरू की भारत की खोज करने, नया भारत बनाने और उसे महान सिद्ध करने की लालसा से भारत कहाँ पहुंच गया है और उसका क्या परिणाम आया है, उसकी ओर कवि ने ध्यान खींचा है। हमारे कवि ने अत्यन्त वेदना के साथ भारत की जिस दुर्गति को देखा, उसे शब्दों में अभिव्यक्त किया है। बताया है कि कैसे चारों ओर शोषण, विषमता, विलासिता, अत्याचार और भ्रष्टाचार पल रहा है। यह भी एक भारत है।

कवि ने हमें इस छोटी सी पुस्तिका में तरह-तरह के भारत का दर्शन कराया है और हमारी भावना में पिछले कल, आज और आगामी कल के भारत का एक मानस चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। कवि, बड़ा कवि, कलाकार होने का दावा नहीं करता। वह बड़ा दार्शनिक होने का दावा भी नहीं करता। वह राजनेता होने का भी दावा नहीं करता। यहाँ तक कि कुछ कर गुजरने का भी दावा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करता। वह भारत को शक्तिभर देखता है और नम्रता के साथ यही चाहता है कि हम भी अपने आस-पास के भारत को देखें तथा अपनी भावना में उसे स्थान दें। कवि के इस भारत में प्रकृति की रमणीयता, गाँव के जीवन का अभाव, नगर की विषमता, उद्योग केन्द्रों का शोषण और राजधानियों की प्रवंचना का दर्पण है। वास्तव में वह हमारी सामूहिकता को, भावना का प्रतिविम्ब है, जिससे देश के प्रति—भूमि, जनता और संस्कृति के प्रति—एक प्रेम और आस्था का उद्रेक होता है। मनुष्य केवल विचारों में, कोरे और कटु यथार्थ में ही नहीं रहता, वह कोमल भावनाओं में भी रहता है। वास्तव में देखा जाय तो इतिहास की महत् घटनाओं के पीछे शक्ति प्रदान करने वाला तत्व भावना ही रहा है। इसी भावना को केन्द्रविन्दु बनाकर साधक जी ने भारत दर्शन किया। इस पुस्तक में हम स्वयं कवि के साथ भारत की यात्रा कर सकते हैं और अपने को भारत के साथ जोड़ सकते हैं।

हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

मोहन लाल तिवारी
३१-७-१९९०

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो शब्द

भारत देश विशाल है। यहाँ अनेक भाषाएँ, अनेक पंथ और अनेक विचार-धाराएँ हैं। लेकिन अनेकता में एकता का आधार यह विश्वास है कि हमारा कर्ता एक है और हम सब उसकी सन्तान हैं, इसलिए भाई-भाई हैं।

भाई-भाई तब तक एक रहते हैं, जब तक अपना भला करते हुए अपने भाई का भला करते हैं। न बुरा चाहें, न बुरा करें। शैव, वैष्णव, जैन, बौद्ध, पारसी, आर्य समाजी, शाक्त, सिक्ख आदि जितने मत हैं, वे सब एक इसलिए है कि अपने मतानुसार चलते हुए भी दूसरे का अनादर नहीं करते। एक दूसरे का आदर करने से ही एकता टिकती है। सभी धर्म एक दूसरे का खयाल रखें, इसी प्रकार शहर वाले गाँव वालों का खयाल रखें, पढ़े-लिखे अनपढ़ों का खयाल रखें, मशीन वाले ग्रामोद्योग का खयाल रखें और सब मिलकर पशुओं का; वनस्पति जगत् का भी खयाल रखें तो यह देश अखण्ड रहेगा एवं समृद्ध भी होगा।

तुलसी के पौधे को पानी देना, वृक्ष, नदी, पर्वत को विभूति मानना, गो-पूजा करना और राष्ट्रीय प्रतीकों को समादर देना वैचारिक सम्पन्नता का लक्षण है। भारतीय समाज ने उन सबको अपने परिवार का अंग बनाकर जो आदर्श उपस्थित किया है, वही 'भारत-दर्शन' है।

आचार्यकुल (मासिक) के सम्पादक श्री शरद कुमार साधक ने छंद बद्ध रचना में 'भारत-दर्शन' की सर्वजनोपयोगी झाँकी प्रस्तुत की है। आशा है इस रचना का सर्वत्र स्वागत होगा और राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा।

वर्धा
११ सितम्बर १९८६

—राधा कृष्ण बजाज
कार्याध्यक्ष अ० भा० गो सेवा संघ

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन—एक आर्षदर्शन है। अनेक ऋषियों ने आजीवन परिश्रम, प्रयोग एवं सत्यों को आत्मसात कर इसे देखा है। उन्होंने और उनके पदचिह्नों पर चलने वाले श्रद्धाशील अनगिन शिष्यों ने पदयात्राएँ कर इसे लोकगत बनाया है। लोककथाओं, लोककलाओं एवं लोकव्रतों में इसकी शाश्वतता मुखरित है। यह जीया जा रहा है ग्राम-ग्राम के, घर-घर के, व्यक्ति-व्यक्ति के सांस-प्रश्वांस के साथ। इसे किसी एक ग्रन्थ या ग्रन्थ-समूह में लिपिबद्ध करना सम्भव नहीं है।

बड़ा प्यारा है भारतीय दर्शन का विकेन्द्रित फैलाव। बड़ा गहरा है जन-जन के अन्तर्गत-आत्मा से अनुस्यूत इसका मूल। बड़ा व्यापक है विविधताओं से ओत-प्रोत इसका इन्द्रधनुषी रंग। यह हर समय हमें आवेष्टित किये रखता है, पर हममें से कइयों को इसका भान तक नहीं है। यह इतना सूक्ष्म व जीवनगत बन गया है कि जैसे हम श्वांसो-च्छ्वास का भान नहीं रखते, निश्चिन्तता से सारे काम कर लेते हैं, नाक को धन्यवाद दिये विना, वैसे ही इसके साथ बरतते हैं। इस तरह 'अतिपरिचयाद् अवज्ञा' भी हो रही है इस दर्शन की—भारत में, भारतीय जनजीवन में।

आज विश्व के विकसित देशों की जनता जीवन मूल्यों की तलाश में भागी-भागी भारत के द्वार आ रही है, ताकि उसे अपनी समस्या को हल करने की कुंजी मिले। दूसरी ओर जो भी हमारा भारतीय तरुण विदेश जाता है, उसे घेरकर भारतीय जीवन-दर्शन का रहस्य समझाने का अनुरोध किया जाता है। भगवा कपड़ा पहने जहाँ भी भारतीय चेहरा दिखा कि विदेशियों के झुण्ड के झुण्ड उसके आसपास एकत्र हो जाते हैं, जैसे गुड़ पर चींटियाँ। विदेशियों की जिज्ञासा को

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझकर तभी समाधानकारी बातें बतायी जा सकती हैं, जब बताने वाले को भारतीय भूगोल, जन-जीवन, जलवायु, रुचि-शुचि, आशा-उत्साह से भरी दृष्टि एवं सत्यं-शिवं-सुन्दरं को अभिव्यक्त करने वाली अस्मिता की पहचान हो। थोड़े में, परिपूर्ण भारतीय विचार और विकास, रसमय शैली में और स्मृति उपकारक काव्य-छंद में सही पहचान कराने वाली कृति है—भारत-दर्शन, जो हमारे तरुणों के लिए एक अनमोल भेंट है।

श्री शरद कुमार साधक ने इस कृति में भारतीय-दर्शन को प्राण-वान प्रस्तुति दी है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। वे महावीर की तपस्या प्रधान परम्परा में कई वर्ष लवलीन रहे। फिर महर्षि विनोबा के समन्वय की बौद्धिक+भौतिक कृषि की भूमि से जुड़ गये। सर्वोदय साहित्य निर्मिति की प्रकाशन धुरा भी वर्षों तक सँभाली और अपनी सृजनशीलता दिखायी। कायदे, वायदे और फायदे से दूर रहते हुए उन्होंने अकेले अपने पैरों पर खड़े रह कर जो सेवा की, उससे आचार्य-कुल रूपी विनोबा का भव्य स्वप्न आकार ले रहा है, पंचशक्ति सहयोग का अधिष्ठान बन रहा है और सर्वोदय संगीत को बल मिल रहा है। इस तरह कृति-वृत्ति की स्वाभाविकता का प्रसाद इस काव्य में है। इसे पढ़ते-पढ़ते सहअस्तित्व का बोध होता है और भारतीय-दर्शन एवं जीवन का सही स्वरूप ध्यान में आता है।

इस व्यापक सृष्टि को अपनी चर एवं अचर संपदा से निर्मित होने में कोटि-कोटि वर्षों का काल लगा है। निर्माण की अबाध गति के कारण ही अनन्त योनियाँ और प्रत्येक योनि की हजार-हजार नस्लें अस्तित्व में आयी हैं। सह-अस्तित्व के बिना क्या सृष्टि विकास हो पाता ?

पृथ्वी पर मानव का जन्म होने के बाद अनेक मानव-कुल एवं उनकी विशेषताओं का निर्माण होने में काल का हजारों वर्ष बीता है।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर मानव-कुल के पास अपनी परम्पराएँ, अपनी निजी सभ्यताएँ हैं, जो विकास पाती रहती हैं। दूसरों से आदान-प्रदान करने में श्रेष्ठ वस्तुओं का बंटवारा भी होता रहता है। सह-अस्तित्व मान्य होने के कारण ही सभ्यता और उपासना की अनन्त छटाएँ पनप पायी हैं।

ऐसे विशाल और विविधता से परिपूर्ण विश्व में यदि यह गलत तत्व ज्ञान, गलत मनोविज्ञान, गलत अर्थनीति, गलत राजनीति उभर आये कि "जिनके पास शक्ति, साधन या सत्ता है, वे दूसरों को कुचलने के अधिकारी हैं और 'गलाकाटू' स्पर्धाएँ ही कुशल जीवन की कसौटी हैं" तो क्या होगा ? राक्षसी बल और उसका एकाधिकारी सार्वभौमत्व ही विश्व का भविष्य हो जायेगा। इसलिए भारतीय संस्कृति न केवल इन गलत विज्ञानों का प्रतिवाद करती हैं, वरन् यह चिरन्तन सन्देश देती है कि 'असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय'। सही तत्त्व ज्ञान, सही मनोविज्ञान, सही अर्थनीति और सही राजनीति के बिना जीवन निरापद नहीं रह सकता है। इसमें जब-जब व्यवधान होता है, तब-तब ईश्वरीय शक्ति अवतार लेकर असत् का विनाश करती है और सत् का सृजन करती है।

भारतीय संस्कृति में सामुदायिक अनुष्ठानों का बहुत महत्व है। प्रसंग आनन्द का हो या दुःख का, शिक्षण का हो या प्रकृति के साथ संवेदनशीलता बनाये रखने का, ऋतुचक्र के साथ आहार-विहार बदलने का हो या तीर्थ यात्रा पर जाने-आने का—सारा गाँव एकत्र हो जाता है। वह प्रसंग व्यक्ति विशेष का न रहकर सामुदायिक बन जाता है। शादी का वरघोड़ा, मृत्यु के बाद की शव यात्रा, शिक्षण का उपनयन, शरद पूर्णिमा का जागरण, उत्तरायण के दिन का तिल-गुड़ खाना, रक्षाबन्धन, श्रावण का उपवास, गणेश चतुर्थी, ऋषि पंचमी, पितृपक्ष में श्राद्ध करना इत्यादि सामुदायिक स्तर पर आयोजित कार्यक्रमों में परस्पर सुख-दुःख बाँटने की भावना निहित है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष;

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षित-अशिक्षित, अमीर-गरीब, काले-गोरे, विभिन्न प्रान्त या भाषा-भूषा वाले भारतीय जनों में अनेक विध अनुष्ठानों व रिवाजों से सामुदायिक आत्मबल का निर्माण होता है।

समूह शक्ति का सर्जन और वर्धन करने का एक प्रभावी साधन वाङ्मय है। वाङ्मय के जरिये पुरानी पीढ़ियों का अनुभव नयी पीढ़ियों को मिलता रहता है। हर पीढ़ी ने भारतीय वाङ्मय को समृद्ध किया। युगानुरूप वाङ्मय का नव निर्माण हुआ और हो रहा है। पुराने के प्रति आदर है और नये के लिए अवकाश है। चार वेद, छः शास्त्र, अट्ठारह पुराण, एक सौ आठ उपनिषद, स्मृतियाँ, इतिहास ग्रन्थ, महाकाव्य, नये-नये तत्वज्ञों के जीवन-उन्नयन विषयक विचार इस देश में रहने वालों के लिए 'काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्' विनोद पूर्वक काल-व्यतीत करने के विषय हैं। देश और दुनिया में कभी कोई अनुभव की बात लिखे जो संयम और सह-अस्तित्व को बढ़ाये, उसका भारतीय समाज परम्परा में सदा स्वागत है।

हाँ, सह-अस्तित्व के साथ संयम चाहिए इस परम्परा को।

संयम किसलिए?

यदि आदतें शुद्ध और सादी रखीं तो थोड़े भोगों में भी सन्तोष सुख मिलेगा। यदि आदतें बेलगाम रखीं तो अत्यधिक सुविधाओं में भी ग्लानियाँ बढ़ेंगी। मनुष्य जीवन दुर्लभ है। आवश्यक है भोग में थोड़ा-सा समय देकर शेष सारा समय मनुष्य मुक्त-चित्त रहे तो पंचेन्द्रियों के अलावा भी विकास के एवं विश्वास के कई नये आयाम खुल सकते हैं। विश्व के विशाल दायरे में प्रवेश करने का एकमात्र द्वार संयम है।

संयमी को उपहार में सामान्य बुद्धि मिलेगी। संयमी की कुशाग्र बुद्धि की धार तेज रहेगी। संयमी को ही सूक्ष्म संवेदना युक्त दिव्य बुद्धि

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी मिलेगी। इन शुद्धि-बुद्धियों का ख्याल रखकर खान-पान, खेल-कूद, काम-काज, व्यायाम; विहार, विश्राम, मनोरंजन-भजन आदि का चुनाव करना चाहिए। प्रकृति एवं उसके विधि-विधानों को पहचान कर शुद्ध और सात्विक जीवन में रची-पची रहने वाली बुद्धि ही वैज्ञानिक बुद्धि कही जायेगी। वैज्ञानिक बुद्धि अतिशय प्रामाणिक होगी।

'सादा जीवन उच्च विचार' की उक्ति के अनुसार संयमी समझता है कि 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'। हल, कुदाल फावड़ा आदि से अपना अन्तःकरण विदीर्ण होता देखकर भी धरती मां मेरे लिए हजारों वर्षों से अन्नदात्री बनी हुई है। नक्षत्रमालाएँ ऊर्जा के स्रोतों से सृष्टि को भरती हैं। पर्वत-नदियाँ जीवन-जल की झारियों से प्यास बुझाती हैं। मूक-हँसती हरियाली पत्र पुष्प-फल प्रदान कर अभिवादन करती है। पशु-प्राणी-पंखी-जीव-जन्तु आदि के सम्मिलित पराक्रम पर मानव संस्कृति खड़ी है। अतः वह खूब प्यार कर उठेगा इस ब्रह्माण्ड को, ब्रह्माण्ड-नायक को। वह सोचेगा कि जब ये सारे मेरे इर्द-गिर्द सेवा का, परोपकार का, श्रम का, समर्पण का माहौल बनाये हुए हैं, तब मैं बदले में इन पर क्या प्रत्युपकार करूँ? सारा विज्ञान मैं इसलिए सीखूँ कि इनमें से हर एक को हँसाऊँ। ऐसी व्यापक 'परस्परं भावयन्तः' वाली ऋण-बुद्धि कर्तव्य-बुद्धि से जो कृति होती है, उसी का नाम भक्ति है। भक्ति से संतोष जनित अहिंसा, भेद-मुक्त प्रेम और विश्व सख्य का धर्म निकलता है : 'अहिंसा परमोधर्मः'। परमात्मा का सामीप्य समझने का यही मार्ग है। इसीलिए कहा गया है कि संयम वह बुनियाद है, जिस पर सज्जनों के जीवन की रचना होती है। संयम का अभ्यास बचपन से करना होता है—संवेदनशील हृदय बनाकर। यौवन में तैयारी करनी होती है प्रौढ़त्व की। बुढ़ापे में आयोजन होता है—उत्तम स्तर की मृत्यु के वरण का, ताकि पुरुषार्थी, विवेकी, संयोजन-कुशल, सफल जीवन जीने वाला अन्त में निर्भयता पूर्वक जहाँ से आया, वहीं लौटने को हँसी-खुशी निकल पड़े।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां कोई अमर नहीं है। परन्तु वास्तविक मृत्यु भी किसी की नहीं होती। हर क्षण हममें से एक अंश मरता है, एक अंश सनातन रहता है। इसलिए जिस सत्यमार्ग को समझ लिया, उस पर जीने के लिए हम स्वतंत्र हैं। यह स्वतंत्रता तभी परिणामकारी होती है, जब हम परस्पर पूरक रहें, एक दूसरे को सहें—धारण करें। जिससे सबका धारण हो, वही एकमात्र चलने लायक मार्ग है। उस मार्ग पर चले बिना भारत-दर्शन नहीं होता।

'भारत-दर्शन' किताब पहली बार हाथ में आयी, उसी दिन मैंने साधकजी को धन्यवाद दिया था। उसका दूसरा संस्करण संशोधित हुआ, फिर तीसरा परिवर्धित भी हो गया है। इससे इस पुस्तक की कीमत और शोभा बढ़ी है। हर भारतीय की अंतर्यामी-अस्मिता इस पुस्तक के जरिए बाहर आकर उसके सामने खड़ी होगी और भारत माँ का हर सच्चा बच्चा इसकी पंक्तियों को पढ़ते-पढ़ते जाने-अनजाने यह प्रण लेगा कि मैं भारतीय परंपरा का रक्षण-पोषण-संवर्धन करूँगा।

श्रेय और प्रेय की धाराएँ अनादि काल से चलती आयी हैं। कोई धीर-वीर-हीर ही प्रेय का माया-जाल वेधकर श्रेय के उन्नत शृंगों पर विजय कर पाता है। पर हमारी भारत माँ तो भक्त, दाता और शूरवीर जनना ही जानती है। हर भारतीय धीर-वीर-हीर बने—यही असली भारतीय व्यवस्था है। इसलिए स्वतन्त्र-भारत पुनः ऐसी गौरवशाली संतति से भर जाये—इस दिशा में भारत-दर्शन का एक योगदान रहेगा।

ब्रह्म विद्या मन्दिर
पवनार (वर्धा) ४४२१११
२ अक्टूबर १९८७

—प्रविणा का प्रणाम

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी ग्राम युनिवर्सिटी के वाइस चान्सलर का अभिमत

प्रकाश-रेख

साधक जी की यह छोटी सी पद्यकृति—भारत दर्शन
इस बड़े-पुराने, बड़े भारी अनेक विध देश के
कई पहलुओं की जानकारी देती है
इसमें झलकियाँ हैं देश की खूबियों/खामियों की
और अंकित हैं कल्पनाएँ आदर्श की/राह की
दिया है कम शब्दों में अधिक सार पद्य द्वारा
प्रयास नहीं है इसमें
काव्य की कल्पना, विचार, प्रेरणा, स्रोत-खोज
पर इंगित अवश्य है दिशा का/दिलासा का
एक बिन्दु अन्त्य को
कमजोर से कमजोर को बराबरी पर लाने का भाव
दूजा बिन्दु विभिन्नताओं में एकता
हित-विरोधों में हित-साम्य प्रतिष्ठित करने का चाव
दोनों को जोड़ती रेखा है—भारत-दर्शन
भारत का दृश्य भी और फिलसफा भी

गांधीग्राम
१८ अप्रैल, १९८८

—देवेन्द्र कुमार
(वाइस चान्सलर)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय

आचार्य कुल की ओर से 'भारत दर्शन' पुस्तक प्रकाशित हो रही है। यह रचना 'साधक' जी की सतत साधना का परिणाम भी है और प्रमाण भी। यह समाज, संस्कृति और स्वदेश का फोटो चित्र मात्र नहीं, कटु यथार्थ और मनोहर आदर्श के मिश्रण का एक इन्द्रधनुषी मानचित्र है। इसमें व्यतीत अतीत की गरिमा के प्रति अनन्त अनुराग, साक्षात वर्तमान की विषमताओं के प्रति असीम असन्तोष और भावी भविष्य की सम्भावनाओं के प्रति अपार आस्था है। इसमें सरकार की सत्ता का नहीं, सहकार के सामर्थ्य का समर्थन है; सेना के शस्त्रास्त्र का नहीं, सेवा के शक्ति-शास्त्र की प्रशस्ति है; परावलम्बन की पराधीनता की नहीं, परस्परावलम्बन की सहजीवी स्वतंत्रता की संस्तुति है; परशोषण का नहीं, पर-पोषण का शिक्षण है; सभी धर्मों के समादर की सीख ही नहीं, आने वाले अनेक धर्मों के लिए हृदय में खाली स्थान रखने की सलाह भी है; नगर की अमीरी मिटाने की नहीं, गाँव से गरीबी उठाने का संदेश है, और है शासनयुक्त मानवता को शासनमुक्त कराने का समाश्वासन। इसमें ग्रामराज्य द्वारा रामराज्य प्राप्ति की दिव्य दृष्टि है, और है पूंजी आश्रित उत्पादन-वितरण प्रणाली को श्रमाश्रित पद्धति में परिवर्तित करने की अचूक कुंजी। गांधी जी के आदर्श और यत्न से निर्मित, पर अनुद्घाटित सपनों को इसमें साकार व्यवहार का धरातल दिया गया है। राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं का प्रस्तुतीकरण और निदान तो है ही, समाधान की दिशा भी दर्शित है। नये जीवन मूल्यों के स्पन्दनों से आप्लावित चिन्तन की नूतन दिशाएं भी है और प्रयोग के लिए विशाल आकाश का विस्तार भी। इसमें व्यवहार, विचार और वाणी में

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकता का जीवन दर्शन है। इसमें दृष्टि वैभिन्य मिलेगा, पर निष्ठा से ओत:प्रोत, विचार स्वातंत्र्य दिखेगा सहज उदारता से अभिभूत। यह साधक जी के जगत जन्य जीवन, बुद्धिजन्य चिंतन और स्वानुभूति जन्य ज्ञान का एक अद्‌भुत मिश्रण है, जो भविष्य के प्रति संशयशील मानव के लिए बहु आयामी सह अस्तित्व का सूत्रबद्ध सिद्धान्त प्रस्तुत करता है।

साधक जी मूलत: समाजशास्त्री हैं और तत्वत: जीवन दार्शनिक तथा वस्तुत: स्वतंत्र विचारक। काव्य तो उनकी सर्जनात्मक कल्पना का वाहन और स्निग्ध अभिव्यक्ति का साधन मात्र है। वे सांस्कृतिक जागृति के मनीषी हैं, सामाजिक परिष्करण के स्वप्नदर्शी हैं और परम्परा-प्रसूत स्पशास्पर्श के कट्टर प्रतिकर्षी हैं। वे काव्य से अधिक कवि हैं कर्म के, उनका आराध्य कला के जीवन से अधिक जीवन की कला है। उनका काव्य 'स्वान्त: सुखाय' नहीं, 'सर्वजन हिताय' है। इसमें हर भारतवासी के उल्लास-विषाद, संघर्ष-निर्माण, भाव-अभाव के हृत्स्पन्दन हैं। इनके काव्यदर्पण में हर भारतीय अपना मुखड़ा देख सकता है, अपनी समस्या खोज सकता है और उसका समाधान पा सकता है। उनकी अनुभूति उनकी कम, जन-मन की, जन-जन की अधिक है। उनकी लेखनी की नोक से खिंची प्रत्येक रेखा के पीछे झांकती है—पीड़ा-परेशानी हर सचेत नागरिक की। उनका साहित्य जीवन की परिभाषा है। इसमें भावावेग और कल्पना की प्रधानता नहीं, अनुभूत सत्य की ही प्रमुखता है। अत: इसमें परम्परित सौन्दर्य और सौष्ठव की पराकाष्ठा भले ही न दिखे, पर निश्चय ही इसमें राष्ट्र की आत्मा में प्राण फूंकने का सामर्थ्य है, 'भूषण के भणन' की तरह कानों में अमृत-वर्षा की शक्ति है। एक सावधान और सचेत साहित्य स्रष्टा के रूप में निश्चित हीं इनकी क्रान्तदर्शी दृष्टि को प्रचुर प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधक जी गांधी-दर्शन के निष्णात पंडित हैं। वे गांधीदर्शन की कल्पनाओं, आकांक्षाओं और अभिलाषाओं को नूतन साँचे में ढालकर एक मोहक रंग-रूप प्रदान करते हैं। वे कहते उतना ही हैं, जितना कर पाते हैं अतः उनका जीवन ही दर्शन है। उन्होंने अपनी समग्र, समन्वयवादी और विश्वमानवतावादी दृष्टि से भारतीय क्षितिज को व्यापकता भी दी है और विशालता भी।

भारत में विविध भेद-विभेद हैं—भाषा के, धर्म के, वर्ग के, वर्ण के। यहाँ झुग्गियाँ-कोठियाँ, जंगल-मरुस्थल, पर्वत-सागर, गाँव-नगर, उर्वर-ऊसर, मालिक-मजदूर, राव-रंक, नकल-असल सभी तो हैं। पर साधक जी इससे रंचमात्र भी निराश नहीं, उलटे प्रसन्न हैं। वे खोज लेते हैं 'भेदों में अभेद की रेखा' और चिल्ला उठते हैं—'फूल सब गुलदस्ते की शान'। विविधता ही विधि का विधान है, विषमता ही प्रकृति का वरदान है, विभिन्नता ही जीवन की पहचान है। सबसे बड़ा प्रतिष्ठान तो वही है, जहाँ सबकी रुचि-तृप्ति के सर्वसुलभ सामान हों। आवश्यकता है केवल अनेकता में एकता, एकलयता, एकरूपता लाने की। सितार में कितने प्रकार के तार होते हैं, पर सब मिलकर कितना सुरीला स्वर देते हैं! समूहवादन में कितने वाद्ययन्त्र होते हैं; पर सम्मिलित स्वर कितना श्रुतिसुखद होता है! रंग अनेक, पर मिलकर कैसा बहुरंगी चित्र बना देते हैं! बिल्ला चाहे जिस धर्म का हो, गढ़न चाहे जिस प्रदेश की हो, भाषा चाहे जिस भाग की हो, लगाव चाहे जिस क्षेत्र से हो, आस्था चाहे जिस संस्कृति में हो, हर भारतीय की केवल एक ही पहचान है—भारतीयता।

'भारत सोने की चिड़िया थी'। थी ही नहीं, है भी। अन्तर केवल इतना हो गया है कि पहले बाहर के बाज झपट्टा मारते थे, आज घर के। राजनीति के अखाड़े में सत्ता और शक्ति, पद और पैसा, कुर्सी और गद्दी के जोड़ होड़ में खड़े हैं। अर्थ मनुष्य से भी प्रधान हो

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है। व्यक्ति-व्यक्ति के बीच विग्रह और प्रतिस्पर्धा, बढ़ती आर्थिक विषमता, संकीर्ण साम्प्रदायिकता और कट्टर असहिष्णुता के पीछे केवल शक्ति और स्वार्थ का हाथ है। शासन कुछ नहीं, केवल कवच है सत्ताधारियों और संपत्तिवालों की सुरक्षा का। साधक जी ने देश की नब्ज पर हाथ रखा, रोग का निदान किया और अपने नुसखे में निर्देषित किया है राज तन्त्र के बुखार के लिए लोकतंत्र का काढ़ा, औद्योगिक व्यवस्था की विकृति से क्षत-विक्षत रिसते घावों पर लगाने के लिए कुटीर उद्योगों का मल्हम, अनैतिकता के सरदर्द के लिए श्रम-निष्ठा की गोली, शासन और प्रशासन की कठोर यातनाओं से कराहती मानसिकता को राहत देने के लिए आत्मानुशासन का चूरन और साम्प्रदायिक विद्वेष तथा साम्प्रदायिक राष्ट्रीयता के आस्तीन के साँपों से डसे गये समाज के लिए सर्वधर्म समभाव की सुई। उनके व्यक्तित्व में एक अलौकिक आकर्षण है। उनके शब्दों की बड़ी चोट लगती है, उनकी ओट में वही विशिष्ट व्यक्तित्व जो रहता है। वे कर्म के आख्याता हैं, अहिंसा और मैत्री के पूजक हैं, सामूहिक आकांक्षा और आशा के संवाहक हैं, जन-सेवा की आध्यात्मिक साधना के साधक हैं और जीवन की सर्जन-कला के आराधक हैं। इसीलिए भारतीय जीवन की हर ज्वलन्त समस्या को वाणी प्रदान की है और राष्ट्र के प्रति अपनी सजगता और सतर्कता का परिचय दिया है। वे केवल गुर देते हैं, उसे पहचानना, जानना और मानना होता है।

साधक जी को अपने गाँवों से अपार प्रेम है। गाँव भारत की आत्मा है। नगर तो गौण है। गाँव ही भारतीय संस्कृति के गढ़ हैं। वे ही जनजीवन के केन्द्र हैं। भारतीय संस्कृति गाँवों में ही जन्मी और पनपी और वहीं सुरक्षित भी रह सकती है। साधक जी जब गाँव को दारिद्र्य-दानव के चंगुल में कराहते देखते हैं तो उन्हें बड़ी मार्मिक पीड़ा होती है। जहाँ घी, दूध, दही की नदियाँ बहती

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं, वहाँ सूखी-सूखी रेत की ढेर देखकर उनका हृदय आहत हो जाता है। गोपालक को विवश होकर गोघातक बनते पाकर उनका कलेजा फट जाता है। सबको भरपेट खिलाकर स्वयं पिचके पेट पर हाथ रखकर सो जाने वाले किसान की क़िस्मत पर उन्हें रुलाई आ जाती है। वे इस स्थिति को बदलने हेतु रचनात्मक कार्यों में जुटे हैं।

'गाँव की खेती गाँव का राज'— सूत्र है ग्रामोत्थान के लिए। गाँधी जी का सपना था—शहर से हटकर गाँव की ओर मुड़ना और गाँवों को ही वास्तविक भारत मानना। यही सपना साधक जी का भी है। इसी सपने की स्वस्थ भूमि पर इन्होंने अपने यथार्थ सत्य के भवन का स्वतन्त्र रूप से विकास किया है। ग्राम्य जीवन की प्रत्येक समस्या का बड़ा सचेत और सतर्क होकर परिचय भी दिया है और उपचार भी। इस दृष्टि से ये ग्रामीणों के सर्वश्रेष्ठ सलाहकार और मित्र हैं। हाथ पर हाथ रखे लाचार मजदूर का विषाद इनसे मधुभरी वाणी का आश्वासन पायेगा, उद्योग-शिल्पी के अवमूल्यित हाथ इनके व्यक्तित्व से अवलम्ब पायेंगे, अपने लाल-लाल गरम खून को नीरंग शीतल स्वेद में निरर्थक बदलने वाला श्रमिक इनके गुर में गौरव प्राप्त करेगा, नगर के भ्रमजाल में फँसते मूक ग्रामीण को इनके सन्देश से दिशा मिलेगी और सर्वहारा वर्ग की आशा और आकांक्षा को सर्वोदय-विचार का सहारा मिलेगा। ग्रामोत्थान की विधियाँ इनकी अपनी हैं—जो राज-सरकारी नहीं, अर्धसरकारी नहीं, शुद्ध असरकारी हैं। पूँजी आश्रित उत्पादन पद्धति श्रम-आश्रित बना देने पर ग्राम राज्य स्वयमेव आ जायेगा। इससे केन्द्रित उद्योगों का बहिष्कार होगा और गाँव स्वयंपूर्ण और स्वावलम्बी इकाई के रूप में उभर उठेगा। एक शोषण हीन, अतः शासनमुक्त समाज की स्थापना होगी। जन शक्ति के सृजन से लोकतन्त्र का सहज विकास होगा। गाँव इतना सम्पूर्ण होगा कि वह स्वयं संचालित भी होगा। विकसित होने पर गाँव समुन्नत करेंगे नगरों को।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और नगर समृद्धि देंगे गाँवों को। इसी नवनिर्माण की भूमि पर राष्ट्र का नया भवन खड़ा होगा।

गाँव में धन विनिमय नहीं, वस्तु विनिमय होगा। वहाँ का चालू सिक्का पैसा नहीं, मजदूरी होगी। इस सिक्के को कपड़े से भी, अन्न से भी, सामान से भी भुना सकते हैं। हाँ कपड़ा लेना हो तो अपने काम से प्राप्त गेहूँ देकर ले सकते हैं। औजार—कृषि तथा अन्य कार्यों के—गाँव में ही बनेंगे, धन बाहर नहीं जायेगा। सहकारी जीवन का संघटन होगा। गाँव स्वावलम्बी होंगे, स्वाश्रयी होंगे। स्वयंप्रेरित समाज बनायेंगे। इससे प्रतिस्पर्धा और होड़ कम होगी और विकृत ग्राम-जनता में समरसता और एकात्मता का विकास होगा। सारा प्रयत्न लोकशक्ति के निर्माण का ही है। लोकनीति का शुद्धीकरण हो जायेगा। यहाँ निर्णय का आधार बहुमत नहीं सर्वमत होगा। इसी में अल्पमत की सर्वाधिक सुरक्षा है। इसमें श्रम ही प्रधान होगा। बुद्धि-श्रम व्यवस्था लायेगा और शरीर-श्रम सृजन करेगा। श्रमजीवी की आमदनी बुद्धिजीवी से कम नहीं होगी और न आराम, प्रतिष्ठा, बचत, मनोरंजन ही कम होंगे। अमर्यादित कमाई की किसी को छूट नहीं होगी। आर्थिक समानता के बिना कैसी राजनैतिक समानता ?

प्रत्येक निर्वाचन गाँव से प्रारम्भ होगा। हर प्रश्न का निर्विरोध निर्णय होगा। गाँव को अपने पाँव पर खड़ा होना होगा। अपनी रोजी-रोटी स्वयं कमाना, अपने उद्योग-धन्धे स्वयं चलाना, अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करना और अपनी संरक्षा और सुरक्षा की व्यवस्था स्वयं करना ही गाँव का मुख्य ध्येय होगा। 'ग्राम सभा सोचे गाँवों का, नगर सभा नगरों का सोचे' यह है ठोस धरती—जिसपर खड़ी होगी ग्राम नगर व्यवस्था की सुदृढ़ दीवार। अतः साधक जी को ग्रामीणों का दो नावों पर पैर पसन्द नहीं। 'गाँवों में रहनेवालों का शहरों में आवास बने क्यों ?' इस प्रश्न का उत्तर ही ग्राम विषमता

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की समुचित औषधि है। साधक जी की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में गाँवों का समाज केवल गाँवों का ही समाज होगा। उसका विस्तार ऊँचाई में नहीं, तालाव में गिरे पत्थर से निकलती लहरों के विस्तार सा होगा—एक समान, एकरूप, एक आकार, एक प्रकार का। निम्नतम स्तर को भी विकास का उतना ही अवसर होगा, जितना उच्चतम को। गाँव का व्यक्ति अपने गाँव के लिए, गाँव अपने ग्राम-समुदाय के लिए, ग्राम समुदाय जनपद के लिए, जनपद प्रदेश के लिए और प्रदेश देश के लिए सदा तत्पर होगा। किसी की किसी से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं, प्रतियोगिता नहीं। सभी एक ही शरीर के अंग होंगे और एक दूसरे से पाते रहेंगे शक्ति, साहस, सलाह और सहयोग। पहली और अन्तिम इकाई एक सी और बिलकुल एक सी होगी। इससे किसी की महत्वाकांक्षा सीमा का अतिक्रमण नहीं कर पायेगी, सामाजिक संकट के मूल में छिपी विषमता अपना विनाश-तांडव नहीं कर पायेगी और समता के अभाव में पनपती संघर्ष-अनिवार्यता अपना सर नहीं उठा पायेगी।

साधक जी ने समानता और समता की स्थापना में इस तथ्य पर अत्यधिक बल दिया है कि चेतना के विकास क्रम में समता एक उच्चस्तरीय विकास की भावना है। सामान्य स्थिति तो असमानता की ही है। दूसरे के समान अपने को रखने के लिए तैयार होना एक उपलब्धि है। किसका चित्त मानने को तैयार होता है कि दूसरा मेरे समान और मैं दूसरे के समान ही रहूँ? असमानता ही सहज-वृत्ति है, विषमता ही प्राकृतिक बात है। पर इनका निवारण ही मानवता की कोटि में आने की प्रवृत्ति का प्रतीक है। समत्व, समानत्व और सख्य अणुयुग की असुरक्षा में मानव की सर्वोपरि उपलब्धि होगी। सम-व्यवहार, सम-वितरण, सम-सुविधा, सम-न्याय, सम-अवसर, व्यक्ति और समाज के हितों में भी साम्य अनिवार्यतः आवश्यक है। साथ ही

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राकृतिक, शारीरिक और आत्मिक संपदाओं का सम-वितरण भी 'मानवीय मूलभूत अधिकार' मानना होगा। ऐसे समाज का गठन केवल सत्य, प्रेम और अहिंसा के तिपायों पर ही हो सकता है। इसके लिए हर व्यक्ति को व्यक्तिहित के स्थान पर राष्ट्रहित, भोग-शौक के अनावश्यक व्यय के स्थान पर सर्वजन-सुलभ सामग्री की अभाव पूर्ति, बुद्धि-वैभव के अत्यन्त समादर के स्थान पर श्रमदेव की पूजा, युद्ध के खतरे के स्थान पर शान्ति एवं सह-जीवन के सुरक्षित दुर्गों का चुनाव, ऐटम-शक्ति की महत्ता के स्थान पर आत्म-शक्ति में निहित सत् पर विश्वास और स्वामित्व की भावना के स्थान पर सेवा-भाव के ही एक मानवता वादी मनोविज्ञान को जन्म देगा। केवल यही मार्ग होगा अध्यात्म एवं विज्ञान सम्पन्न सर्वांगीण मानव संस्कृति की संरचना का।

साधक जी की अपेक्षित शासन-व्यवस्था केन्द्र में बैठे बहुसंख्यक दल के कुछ अल्पसंख्यक लोग नहीं चलायेंगे, वह तो चलायी जायेगी सबसे नीचे के गाँव के लोगों द्वारा। अधिकार केवल कर्तव्य पालन का अधिकार मात्र होगा, शेष तो केवल अपहरण ही कहा जायगा। सरकार को जनता से डरना होगा, क्योंकि जनता ही सरकार को बनायेगी भी और बिगाड़ेगी भी। पर उन्होंने इस बात का अधिक ध्यान रखा है कि इस प्रक्रिया में जनता कहीं निरंकुश न हो जाय—यह सबसे बड़ी और कड़ी राष्ट्रीय व्याधि होगी। यदि व्यक्ति कानून के हाथ से भगकर कानून को हाथ में ले लेगा तो इससे बड़ी अराजकता और निरंकुशता हो नहीं सकती। सरकार से सावधान रहना आवश्यक है, पर जन-भीड़ से सावधान रहना और भी आवश्यक है—जनता बुद्धि से कम, आवेश में अधिक काम करती है। जनता का आतंक शासन के आतंक से कहीं भयावह है। इसके लिए प्रत्येक स्त्री-पुरुष को प्रशिक्षित करना होगा, दीक्षित करना होगा, अनुकूलित करना होगा। प्रशिक्षकों को

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझना भी होगा और समझाना भी कि सुधार स्वयं से प्रारम्भ होता है—दान की तरह।

औद्योगिक सभ्यता की जड़ता के प्रति साधक जी की उदासीनता स्वाभाविक है। इसके विकृत परिणामों से भलीभाँति अवगत हैं, परिचित हैं। आत्मकेन्द्रिता, व्यक्तित्व-हीनता, अमानवीयता और विषमता तथा विवश अनैतिक जीवनयापन की निष्फलता की उन्हें तीखी अनुभूति है। औद्योगिक विकास ने ग्रामीण जनता के बृहत्तम भाग को बाध्य कर दिया है एक सीमितदायरे में सिमट कर नियमित, नियंत्रित और नितान्त अप्राकृतिक तथा अशान्त जीवन बिताने को। वांछित सुविधाओं से अधिक अवांछित दुर्गुणों को ढोना पड़ा। परिवार का प्राकृतिक प्रेम छिन गया, समृद्धि के चक्कर में सामुदायिक भावना भग गयी, आमदनी की विभिन्नता ने नये नये वर्गों को पैदा कर दिया, शरीर श्रम ही नहीं, मस्तिष्क श्रम से भी हाथ धोना पड़ा ! मशीन प्रधान हो गयी। मानव का कोई स्थान नहीं रहा। उद्योगवाद ने मानवको नैतिक दृष्टि से पतित, मानसिक दृष्टि से हीनता-ग्रस्त और शारीरिक दृष्टि से निर्बल बना डाला। इसके अतिरिक्त, कोई भी राष्ट्र केवल उद्योगधन्धों से ही जीवित नहीं रहता और न ही ये राष्ट्र का जीवन ही हैं। वस्तुतः उद्योग-धन्धे मानव के विकारों पर व्यापार करते हैं, दुर्गुणों का लाभ उठाते हैं, असमर्थता को भुनाते हैं और उनका स्वत्व हरण करके स्वामित्व का पद प्राप्त करते हैं। साधक जी ने उत्पादन तथा उपभोग में मानवीय दृष्टि, सर्वोदय की भावना और सामाजिक न्याय को ध्यान में रख कर एक नवीन क्रान्ति का सूत्र दिया है। पूंजी सर्वस्व नहीं है, श्रम का गौरव उससे किसी प्रकार कम नहीं। पूंजी तो केवल विनिमय के लिए साधन है। स्वामित्व विसर्जन और श्रममय जीवन इनके सिद्धांत के दो स्तम्भ हैं। वह चोर है, जो काम किये बिना ही धन पर धन जोड़ता है। इनका मुख्य लक्ष्य है

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन का समान वितरण—आर्थिक समानता। आर्थिक समानता का इन्होंने अर्थ लगाया है—न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति के आधार पर समानता। पूंजी बुरी है तब, जब गरीबों की आवश्यकता की पूर्ति के बिना ही जमा की गयी हो। ऐसा शोषण ही हिंसा है। पर, आवश्यकता किसकी और कितनी मानें ? इसका मानक रखा है भारत की गरीब जनता को। उससे तुलना करके अपनी आवश्यकता को कम करें और उतना ही भर धन रखें। अधिक कमाएँ भी तो उसे समाज की अमानत मानें। उसे समाजहित में, जनकल्याण में लगावें। इस पद्धति से पूंजीपति का विनाश भी नहीं और अन्यों के लिए पूंजी का समुचित उपयोग भी है। इससे हृदय भी परिवर्तित होगा।

साधक जी ने एक अमूल्य सिद्धान्त दिया है—'काम नहीं तो दाम नहीं'। इस दुनिया में अकेले कोई धनी नहीं बन सकता और निर्धन भी नहीं। निर्धन, निर्धन बनना चाहता है, नहीं तो धनी-गरीब का सम्बन्ध बन ही नहीं सकता। हम धनी को दोष देते हैं कि वह शोषक बन गया, पर निर्धन से कभी नहीं पूछते कि वह शोषित हो कैसे गया? शोषित शोषण को आमंत्रित करता है। शोषक और शोषित की प्रकृति और प्रवृत्ति जब मिल जाती हैं तो तालमेल होकर एक शोषित बन जाता है, दूसरा शोषक। अन्याय तभी तक सम्भव है, जब तक अन्याय को सहने वाला विद्यमान हो। अतः इनकी कल्पित दुनिया में न शोषण करने की इच्छा वाला और न शोषित होने को सहन करने वाला होगा। यह तभी सम्भव होगा, जब प्रत्येक व्यक्ति श्रमनिष्ठ होगा। फिर तो उसे न कोई पारिवारिक असन्तोष होगा, न सामाजिक और न वैयक्तिक। बस याद यही रखना होगा कि यहाँ कर्म ही प्रधान है। कर्म के अनुसार यहाँ जो होता है, बस वैसा ही हो ही सकता है। अन्याय करना तो पाप है ही, सहना और बड़ा पाप है। केवल अमीरी को ही रोग न मानें, गरीबी भी रोग है। अमीरी को

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुड़ाना हो तो गरीवी को भी दवा करनी होगी। अमीरी बाँटने से कम होती है तो गरीवी भी बाँटने से कम होती है। हमें सीखना होगा कि समाज का कल्याण सबके कल्याण में निहित है। सबके सुख के लिए प्रयास में ही अपना भी सुख सिद्ध होगा। यही सामाजिकता है। 'जीओ और जीने दो' अब पुराना नारा हो गया, नवीनतम नारा है 'जिलाने के लिए जीना सीखो'। व्यक्तिगत सुख-भावना सामाजिक सुख-भावना से विलग हो नहीं सकती। स्वार्थ के परार्थ का तिरस्कार करते ही दुःख आ दबोचता है। विश्व-सुख की भावना का विकास ही साधक जी का परम लक्ष्य है। यही संस्कृति की भावना है और सर्वोदय की चाहना है।

'साधक' जी धुन के धनी साहित्यकार तो हैं ही, एक सशक्त कलम के कारीगर व पत्रकार भी हैं। देश-भक्ति-भाव पूर्ण वातावरण से अनुप्राणित तथा विनोवा के आह्वान से उद्घोषित समाजशास्त्री भी हैं। इनकी एक एक पंक्ति विप्लव एवं क्रान्ति का शंख फूंकती है। वे एक व्यक्ति हैं, पर अनेक संस्था के प्रतीक। उनकी सेवाएँ केवल हिन्दी साहित्य के नहीं, भारतीय समाजशास्त्र के इतिहास में भी सदैव स्मरणीय रहेंगी। ये अपना प्रकाश स्वयं हैं इसीलिए इनकी वाणी में मौलिकता है, काव्य में ओजस्विता है और अभिव्यक्ति में स्पष्टवादिता है।

'भारत दर्शन' का सारा स्वरूप आचार्यकुल की संरचना के अनुरूप है, इसके सारे सिद्धान्त आचार्यकुल के उद्देश्यों के अनुकूल हैं और इसमें लक्षित सारी व्यवस्था आचार्यकुल प्रणाली के अनुकाम है। वाराणसी 'आचार्यकुल' इसके प्रकाशन से गौरवान्वित हुआ है।

वी० के० राय

(मंत्री जनपद आचार्यकुल, वाराणसी)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी ओर से भी

हम व्यष्टि हैं, समष्टि भी। हमारी सामुदायिक चेतना ही भारत है। इसे कर्मभूमि, पुण्य भूमि, त्याग भूमि कहते हैं, मगर क्या उसके अनुरूप रहते हैं—इसी मनोमंथन का परिणाम है—यह भारत दर्शन।

अ० भा० कृषि-गो-सेवा संघ के अध्यक्ष श्री राधाकृष्ण बजाज, ब्रह्म विद्या मंदिर की सु श्री प्रविणा देसाई, गाँधी ग्राम यूनिवर्सिटी के वाइसचांसलर श्री देवेन्द्र भाई ने पिछले तीन संस्करणों की भूमिका लिखी और इस संस्करण की भूमिका काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो० डा० मोहन लाल तिवारी ने लिखने की कृपा की है। सबके प्रति हृदय से आभारी हूँ। आभारी हूँ प्रकाशक, जनपद आचार्यकुल के मंत्री डा० वी० के० राय एवं सहृदय पाठकों का भी, जिनकी माँग के चलते 'दृष्टि के अनुरूप सृष्टि' का मनोभाव मुखरित हो पाया है। आन्ध्र, कर्नाटक, राजस्थान, मध्य-प्रदेश व उत्तर-प्रदेश के, मित्रों की प्रेरणा भी इस कृति को संशोधित संवर्पित भी करने में सहायक रही है।

भारतीय देवों के लिए वंदनीय रहे हैं और 'स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः' कहकर उन्होंने सबके लिए अनुकरणीय बना रहने का दर्प पाल रखा है, जो समय के साथ थोथा सिद्ध हो चुका है। 'हतं ज्ञानं क्रियाहीनं हता चाज्ञानिनो क्रिया' के अनुसार हमें क्रियाशील और ज्ञानी बने रहना है तो हम अपनी वैयक्तिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक विसंगतियाँ समाप्त करने का संकल्प लें। यह संकल्प लेने/लिवाने में यह कृति सहायक बननी चाहिए क्योंकि इसका आधार 'पढ़ना एक गुना, चिन्तन दुगुना और आचरण चौगुना' है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

—शरद कुमार साधक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत-दर्शन

कौन है भरत भूमि की जान ?
कौन है एक नेक गुणवान ?
फूल सब गुलदस्ते की शान—
कि हम हैं भारत की सन्तान ॥

परिचय

हम भारत में रहने वाले भारतीय है नाम हमारा ।
भारतमाता के चरणों में अर्पित करते जीवन सारा ॥

हमें तिरंगा लगता प्यारा, नारा है—'जय हिन्द' हमारा ।
हिन्द देश का पथ परिचायक 'सत्यमेव जयते' ध्रुवतारा ॥

राष्ट्र गान 'जन गण मन' गायें 'वन्दे मातरम्' मन को भाये ।
सदा महात्मा गाँधी को हम 'राष्ट्र पिता' कह शीश झुकायें ॥

राष्ट्र धर्म है—प्रीति परस्पर, राष्ट्र नीति—सबको सुख देना ।
समाधान जन-गण का करना, जीव जगत् का दुख हर लेना ॥

जीव पाँच सौ किस्मों के हैं भारत में नित विचरण करते ।
दो हजार से अधिक तरह के विहग हमारे मन को हरते ॥

तीस हजार जाति के जन्तु सहजीवी हैं यहाँ हमारे ।
'सुखी रहें सब जीव जगत्' के बोल रहें घर-आंगन सारे ॥

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विहग राष्ट्र का 'मोर' मनोरम 'शेर' राष्ट्र का पशु कहलाता।
लक्ष्मी दुर्गा सरस्वती-सी पूजी जाती है गोमाता ।।

'सुजला सुफला शस्य श्यामला' धरा हिन्द की वसुन्धरा है।
कदम-कदम पर अक्षय निधियाँ लोहा, सोना, खनिज भरा है।।

तेल, कोयला, हीरा, पन्ना, ताँबा, अभ्रक, मैगनीज हैं।
यूरेनियम बहुमूल्य थोरियम ऊर्जाप्रद हर एक चीज़ है ।।

जड़ी-बूटियों से अनुरंजित शीतल सुखकर स्वस्थ पवन है।
वन, पठार, मैदान, मरुस्थल, हिम मंडित गिरि हरते मन हैं ।।

उत्तर दिशि में खड़ा हिमालय, सागर दक्षिण दिशि में भारी।
पूरब से पश्चिम तक नदियाँ सींचा करती क्यारी क्यारी ।।

वन-उपवन में घूम-घूम कर ऋद्धि समझ लो सिद्धि समझ लो।
'यत्पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे' की स्वयं सीख लो स्वयं सीख दो ।।

कभी बजाओ मुरली अपनी गंगा, यमुनाजी के बट पर।
कभी कला-कौशल दिखलाओ कृष्णा, कावेरी के तट पर ।।

कहीं लगाओ कृषि में जीवन, कहीं बढ़ाओ गोधन, पशुधन।
कहीं चदरिया बुनकर समझो कर्म भूमि का अलबेलापन ।।

कर्म धर्म से मिलती शिक्षा, शिक्षा क्या ? जीवन की दीक्षा।
योग-भोग सहयोग रोग की प्रतिपल होती कठिन परीक्षा ।।

यही परीक्षा देकर होती संस्कृत भारत भू की जनता।
रंग अलौकिक रूप निराला जो कि देखते ही है बनता ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खान-पान है तरह-तरह का रुचि शुचि में तरतमता भारी।
पर्वों, तीर्थों, त्यौहारों में घुल मिल जाती जनता सारी।।
है विचार की आजादी पर—यहाँ आचरण की मर्यादा।
मर्यादित जन यही चाहते, लें कम से कम, देवें ज्यादा।।

प्रान्त यहाँ पच्चीस हमारे

निजी अस्मिता के परिचायक आज प्रांत पच्चीस हमारे।
परिपूरक हैं ये सबके सब भारत की आँखों के तारे।।
आंध्र[१], असम[२], अरुणाचल[३], गोआ[४],
उत्तर[५]-मध्य[६] प्रदेश सुहाते।
तमिलनाड[७], कर्नाटक[८], केरल[९],
महाराष्ट्र[१०], मणिपुर[११], मन भाते।।
हरियाणा[१२] है त्रिपुरा[१३], सिक्किम[१४],
मेघालय[१५], गुजरात[१६], मिजोरम[१७]।
नागालैंड[१८], बिहार[१९], उड़ीसा[२०],
है पश्चिम बंगाल[२१] कहाँ कम ?
राजस्थान[२२] रहा बहुचर्चित
प्रिय सबको पंजाब[२३], हिमाचल[२४]।
देखो जम्मू-काशमीर[२५] की
प्रकृति विमोहित करती पल-पल।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वीप—केन्द्र से शासित उनमें
अंडमान सह निकोबार भी ।
नगर हवेली दादर, दिल्ली
हर शासक ने जिसकी सुध ली ॥

बसा हुआ है यमुना तट पर—महानगर सुन्दरतम दिल्ली ।
शक्ति केन्द्र सारे भारत का नहीं किसी से भी कम दिल्ली ॥

दिल्ली अभिनव रूप दिखाती,
लाल किले पर ध्वज लहराती ।
संसद का सम्मान बढ़ाती,
मुद्रा सबको सुलभ कराती ॥

न्यायालय सर्वोच्च वहीं है, वहीं केन्द्र का है सचिवालय ।
कला पूर्ण सुख सुविधा मय सब शासनकर्ताओं के आलय ॥

शासन का स्वरूप

तीन अंग हैं इस शासन के, व्यवस्थापिका—पहला जानें ।
कार्य पालिका अंग दूसरा, न्याय पालिका हितकर मानें ॥

व्यवस्थापिका के अन्तर्गत लोकसभा है, राज्य सभा है ।
कार्यपालिका में मंत्रीगण राष्ट्रप्रमुख की स्वतः प्रभा है ॥

रक्षण कर्तृ संविधान की न्यायपालिका मानी जाती ।
इन तीनों के ताल मेल से लोकतंत्र में ताकत आती ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकतंत्र में मुख्य 'लोक' है 'तंत्र' लोक के ही हित होता ।
सम्मति सूचक मत देने से लोकतंत्र है विकसित होता ।।

स्वार्थ परार्थ न टकराने दें हो समाज सहकारी विकसित ।
क्रियाशील जन-गण-मन होता तभी लोक का सध पाता हित ।।

ज्ञान, शक्ति, बल, धर्म-कर्म मय जीवन जीना सीखी जनता ।
जनता में ही रचा पचा जन सत्य सनातन शाश्वत बनता ।।

जनता ही है यहाँ जनार्दन जनता ही है नर नारायण ।
भारतीय जन इच्छा का ही करता शासन भी पारायण ।।

जन शासन की आस्था का है मंत्र-'पाँच बोले परमेश्वर' ।
कम ही शासक समझ सके हैं-पंचमुखी इस जनता का स्वर ।।

भाव भंगिमाएं हम सबकी

कहीं बोलती जनता संस्कृत, बंगला या गुजराती, हिन्दी ।
उड़िया, असमी, तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़ या सिन्धी ।।

मधुर मराठी, उर्दू अवधी, कश्मीरी या राजस्थानी ।
भेद तीन सौ सत्तर इनके, इन्हें बोलियाँ कहते ज्ञानी ।।

अनुभव करके स्वयं समझ लें 'कोस कोस पर बदले पानी' ।
बार (बारह) कोस पर बदले वाणी' नहीं समझना है नादानी ।।

हम सबको सब सह लेते हैं, आपस में मिल रह लेते हैं ।
भाव भंगिमा से भी अपनी सारी बातें कह लेते हैं ।।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा-भूषा से बढ़कर है 'दयाभाव होवे घट मांही' ।
'बिन सेवा जो द्रवै दीन पर, रामसरिस' हम होना चाही ।।

सत्य, प्रेम, शुचि, समता सम्मुख भाषा गौण हुआ करती है ।
अन्तर्‌तम के उद्‌गारों की वाहक मौन हुआ करती है ।।

गौरवमय इतिहास देश का

हमको मुनियों ने समझाया,
गुणियों के अनुभव में आया ।

अणु-अणु में है ईश समाया,
माया वश जन जान न पाया ।।

जिसने अपने को जान लिया वह धर्म अर्थ का अधिकारी ।
जिसने खुद को पहचान लिया वह काम मोक्ष का अधिकारी ।।

पुरुषार्थ चार का संबल पा
क्या नहीं किया हमने अब तक ?

क्या नहीं दिया हमने अब तक ?
क्या नहीं जिया हमने अब तक ?

नेता भारत का भरत हुआ जिसने शेरों को था पाला ।
शिव ने सांपों को संभाला, था शिवि कपोत का रखवाला ।।

बानर भालू के संग राम, बलराम बैल के संग रहे ।
गोपाल गाय के अंग रहे गोपी-ग्वालों के रंग रहे ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल न भारत पर हावी, है भारतीय ही हावी उस पर।
कलियुग तब ही होता है जब सो जाता इस भारत का नर ॥
जब बैठे तब द्वापर होता खड़े हुए तो होता त्रेता।
कदम बढ़े तब सतयुग होता भारतीय हैं काल-विजेता ॥

नचिकेता ने प्रश्न किये थे
यम से उसके दरवाजे जा।
सावित्री से हुए पराजित
क्या यमराज न धरती पर आ ?

बिना सूर्य की गति को बदले भीष्म न चोला बदला करता।
'कुमति निवार सुमति का संगी पवनपुत्र' निर्द्वन्द्व विचरता ॥
हम वनवासी रहे युगों तक बसे गाँव में नदी किनारे।
शहर बसा-उद्योग लगाये कदम बढ़े हैं सदा हमारे ॥

अवतार मत्स्य को मान लिया
कच्छप, वराह का गान किया।
'नृ-सिंह रूप' पहचान लिया
विकसित संस्कृति को जान लिया ॥

ज्ञात बात यह अंकित टंकित महाकाल के वक्षस्थल पर।
उभरा पत्थर की प्रतिमा से 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का स्वर ॥
मंदिर, मूरत, शिलालेख, गढ़, स्तंभ कीर्ति के, गहन गुफाएं।
मंजिल की इतिवृत्त बताती अलग-अलग सी दिखती राहें ॥

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरातत्त्व का सार समझ लें—पुरखे बढ़े निरंतर आगे ।
ठिठक गये जो चलते-चलते दास हो गये वही अभागे ॥

सौभागी सब कोई हो लें, 'चरैवेति' मिल जुल कर बोलें ।
नये क्षितिज बढ़ चढ़ कर खोलें, भूमंडल में सुख से डोलें ॥

भारतीय हैं सद्गुणग्राही नहीं किसी से नाहक लड़ते ।
बसने आते जो भारत में मेल जोल कर उनसे बढ़ते ॥

जो न कदम से कदम मिलाते, भाँति भाँति के भेद बढ़ाते ।
वे भारत की शान घटाते, विश्व बन्धुता को शरमाते ॥

जो भी चलकर भारत आया, जिसके मन में भारत भाया ।
उसको हमने गले लगाया, ठौर-ठिकाना सबने पाया ॥

आक्रामक से डरे नहीं हम, आक्रामक से मरे नहीं हम ।
गिर गिर कर हम उठे हमेशा नहीं टूटने दिया कभी दम ॥
भारत माता आश्रय देती दूध पिलाती है गोमाता ।
करुणा ममता वत्सलता का पाठ गाय से जन-गण पाता ॥

गोधन भारत का वैभव है इसे नहीं छू सकती जड़ता ।
ऊर्जा, ईंधन, अन्न, वस्त्र हित गाय-बैल से नाता जुड़ता ॥

उत्तम खेती करते थे ऋषि, रही नियति है भारत की कृषि ।
कृषकों से ही शोभित दिशि-दिशि, जागृत रहते वे वासर-निशि ॥

संयम फैला कृषि संस्कृति से फलाहार को मिली प्रतिष्ठा ।
घटी जरूरत मद्य मांस की बढ़ी चतुर्दिक सात्त्विक निष्ठा ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा एक मत हो जनता ने खेती करने वाले उत्तम ।
मध्यम जन व्यापार करें वे, अधम चाकरी मानेंगे हम ।।

चाहा सबने उत्तम बनना, उत्तम करना, उत्तम कहना ।
उपलब्धि रही स्वर्णकाल की सह जीवी बन सुख से रहना ।।

'जिओ जिलाओ' के वर्तन से अभय दान पशु पक्षी पाये ।
वृक्ष-फूल-फल-कंद-मूल तक पोषित वर्धित कर हरषाये ।।

दान शील तप दया साधना पय:पान के साथ सीखकर ।
भारतीय हम परमारथ हित करते तन-मन-धन न्यौछावर ।।

खाना हमने सीखा है पर हमें खिलाना अच्छा लगता ।
जीना हमने सीखा है पर हमें जिलाना अच्छा लगता ।।

मिलना हमने सीखा है पर हमें मिलाना अच्छा लगता ।
पर हित खातिर जीवन देना और दिलाना अच्छा लगता ।।

हमने सबको गले लगाया सबने समरस हमको पाया ।
किसे कहें हम यहाँ पराया ? मेल जोल में धर्म समाया ।।

मेल मुहब्बत के वर्धन हित 'वन्दे मातरम्' बोलें सारे ।
'वन्दे भ्रातरम्' बोलें सारे जय जवान जय कृषक हमारे ।।

माता मानें पर नारी को, पर पति को सब भाई जानें ।
पत्थर समझें पर धन को तब कहलाते जन यहाँ सयाने ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति प्रदेशों की पहचानें

प्रान्त प्रान्त में आयें जायें, समाधान के स्रोत बढ़ायें।
जल-थल-अम्बर के वैभव का पूरा पूरा लाभ उठायें ।।

उत्पादन दें औरों को हम, उपज दूसरों की ले आयें।
मुक्त अभावों से रहने हित, विनिमय में उत्साह दिखायें ।।

सही संतुलन तब होता है—जब न विवशता बनती धंधा।
प्रादेशिकता सर न उठाती बाधाओं का कटता फंदा ।।

बाधाओं को ठेलें खुलकर, बाधाओं को झेलें खुलकर।
बाधाओं पर जय पाने हित बाधाओं से खेलें खुलकर ।।

सुख दुख में जो साथ निभाये उन्हें लिखें खत या लिखवायें।
नाम, गाँव, फिर पोस्ट, प्रांत सह ठीक ठीक पिनकोड बतायें ।।

पता पूर्ण हो साफ लिखा हो
तभी पोस्ट के होता लायक।
गाँव, नगर खत पहुँचाने में
पत्रालय है परम सहायक ।।

बड़े नगर में कई मुहल्ले कई ब्लाक घर कई कोठियाँ।
रहते उनमें अनचिन्हें सब जिनकी आती रोज चिट्ठियाँ ।।

कहाँ डाकिया खोजेगा तब, तार नहीं बँट पायेंगे सब।
धनादेश पहुँचायेगा कब, पता लिखें हम ठीक ठीक अब ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ें लिखावट, लिपियां जानें, उच्चारण-अन्तर अनुमानें।
द्रव्य, काल, गुण गौण न मानें, सकल विरोधों को दफनाने ॥

हर प्रदेश के तापमान में यहाँ भिन्नता पायी जाती।
वर्षा ज्यादा कम होने से सूखा पड़ता, बाढ़ें आती ॥

सूखे को है सुखमय करना, बाढ़ों से भी कभी न डरना।
गर्मी, वर्षा, शिशिर, शीत में निर्भय होकर नित्य विचरना ॥

कहीं मरुस्थल, कहीं शुष्क वन जंगल मिलते सदा बहारी।
मिट्टी काली, लाल, पर्वती, भूरी, पीली, बलुआ सारी ॥

जहाँ पड़ा जल खाद पसीना

जहाँ पड़ा जल, खाद, पसीना 'हरित् भूमि तृण संकुल होती'।
अंकुर उगते, पौधे लगते, धरा उगलती हीरे-मोती ॥

गेहूँ, आलू, राई, सरसों, चना, मटर, जौ सरदी में लो।
चावल, मकई, ज्वार, बाजरा जैसी फसलें गरमी में बो ॥

उर्द, मूंग, तिल, दलहन, गन्ना
साग सब्जियाँ खूब लगाओ।

चाय, तमाकू, कॉफी कम कर
पोषण वाली फसल उगाओ ॥

आम, पपीता, सेव, सन्तरा, हो अनार या जामुन, केला।
राम रिझाओ बेर खिलाकर, जाफल, सीताफल अलबेला ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाद अनोखा अंगूरों का, चीकू, आड़ू बेल, मतीरा ।
खरबूजा, तरबूजा, ककड़ी, आम आदमी को प्रिय खीरा ।।

हर मौसम में अलग-अलग फल
कमी रहे क्यों किसी बात की ?

ब्रह्म भाव से हो उत्पादन
तभी सभी का खुश होता जी ।।

उत्पादक हैं जान देश की उत्पादक हैं आन देश की ।
अन-उत्पादक बन न घटायें कभी भूल से शान देश की ।।

उत्पादन में रचे-पचे जन कृषक देश के भाग्य विधाता ।
दुर्गति कृषकों की होने से नहीं किसी का हित हो पाता ।।

शक्ति संतुलन साधें सारे

सत्तर प्रतिशत कृषक हमारे गाँवों में, पुरवों में रहते ।
फूट, अशिक्षा, व्यसन, मुकदमा, मर्ज-कर्ज, दुख संकट सहते ।।

उत्पादन पर उत्पादन कर वे उपभोग नहीं कर पाते ।
मथुरावासी ही गोकुल का दूध, दही, घी, मक्खन खाते ।।

घर पड़ोस में होता गोरस ग्वाल-बाल लख ललचा जाता ।
आँख बचाकर चखने से क्या माखनचोर न समझा जाता ?

उजड़ रहे हैं गाँव हमारे, ग्रामोद्योग न टिकने वाले ।
करे गुजारा कैसे कोई पड़े रोटियों के ही लाले ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी हाथ में काम नहीं है, दिखता चर्खा कहीं-कहीं है।
वस्त्र विदेशी मन को भाते ! पिटा स्वदेशी धर्म यहीं है ॥

अपना काता बुना पहन कर देखो कितना काम मिलेगा।
दाम मिलेगा, धाम मिलेगा, सुबह शाम विश्राम मिलेगा ॥

घानी रखने से क्या होगा, तेल न घानी का बिकता है।
गुड़ है धन्य कि किसी तरह वह आगे चीनी के टिकता है ॥

बने गाँव के चप्पल जूते पहन लोग कितना सुख पाते ?
घाटा कर अपना, बाटा के बढ़े दाम दे दे इठलाते ॥

करे गाँव में क्या कारीगर माल गाँव से कच्चा जाता।
पक्का बनकर वह फिर आता कारीगर का कौशल खाता ॥

दस्तकारियाँ किसे दिखायें दस्तकार जब ठौर न पायें।
अन्न बेचकर सस्ता अपना खाद-बीज हित दाम लुटायें ॥

पड़ती दुहरी मार कृषक पर,
सबसे ज्यादा भार कृषक पर।

कृषि की है पतवार कृषक पर—
खुद गुर्राता कृषक-कृषक पर ॥

गन्ना पैदा करके भी वह नहीं पेरने का अधिकारी।
उसे मिलों को देना होगा कितनी है उसकी लाचारी !

अपनी मरजी से मिल वाला भाव लगाकर गन्ना लेता।
ठीक समय पर दाम न देता उसे सुरक्षित रखते नेता ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँव-गिराँव में रहने वालों, गृह-उद्योगों को प्रश्रय दो।
ग्रामोद्योगी माल बनाओ, अपने उत्पादों में रस लो॥

आत्मा भारत की गाँवों में
गृह उद्योग गाँव की आत्मा।
इस आत्मा पर हुआ आक्रमण
आस्थाओं का हुआ खातमा॥

पगडंड़ी खा गयी सड़क है, पशु-धन खाते ट्रैक्टर ट्रक हैं।
खेत-झोंपड़ी हथियाने का कोठी वालों को सब हक है॥

जले-भले सौ सौ झौंपड़ियाँ मगर हाथ सब शहरी सेकें।
अपनी खुशियों की खातिर वे ग्राम्य हितों को कभी न देखें॥

तरुण गाँव के गाँव छोड़ कर जब भी शहरों में आ जाते।
उनकी पूरी मजबूरी का नगर-निवासी लाभ उठाते॥

ताप नियंत्रित कार्यालय, घर, बैंक सिनेमा बीमा देखा ?
स्कूटर, मोटर, रेल-यान पर लिखा सभी नगरों का लेखा॥

खाने वाले बैठे सारे, गाँवों वाले खिला रहे हैं।
छोटे-मोटे सब नगरों को गाँवों वाले जिला रहे हैं॥

टैक्स चुकाते लोग गाँव के पाते सुविधा पहले शहरी।
कोर्ट, कचेरी, थाना, प्रहरी, हैं सबकी सब चालें गहरी॥

यहाँ बनावट, दंभ, प्रदर्शन हुआ प्रगति का मापदंड है।
ब्याज, दलाली, जुआ, ठेका, सौदा, सट्टा, चीट फंड है॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर-नगर में लूट मची है,
सभी तरह की छूट बची है।
व्यवहारों में झूठ बची है,
भीतर बाहर फूट बची है।।

सादा जीवन सही आचरण समझ बूझ कर सबने छोड़ा।
रिश्ते नाते गये भाड़ में जब निर्धन से नाता तोड़ा।।

ग्राम भारती कहाँ मुखर है? लक्ष्मी-पालित किसका घर है?
ग्राम देव का—सुर, बेसुर है—गाँव-निवासी पर निर्भर हैं।।

नयी जिन्दगी दो गाँवों को ग्रामवासियों जागो जागो।
ऋद्धि-सिद्धि के ठाँव गाँव हैं गाँव छोड़ कर कहीं न भागो।।

राज गाँव का, काज करें सब, गोकुल जैसी रहे व्यवस्था।
क्रियाशील हो ग्राम सभा तो हो न किसी की हालत खस्ता।।

उपज बढ़ायें, साधन लायें, नहीं परस्पर जन टकरायें।
जब विवाद के अवसर आयें, तब उनको खुद ही सुलझायें।।

पंच-फैसला करें सभी का नहीं कोर्ट तक कोई जाये।
सहमति के हों बिन्दु सुनिश्चित सहजीवन की शान बढ़ायें।।

अन्न, वस्त्र, घर, शिक्षा, रक्षा, स्वास्थ्य योजना समुचित करलें।
स्वयं पूर्ण हो गाँव ताकि सब भुखिया-दुखिया के दुख हरलें।।

प्रथम जरूरत रोटी की है, रोजी, रुतबा सहित मान लें।
CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
रोजी रोटी सुलभ कराना ग्रामसभा का कार्य जान लें।।

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाली हाथ न रहने दें हम, श्रीहत माथ न रहने दें हम ।
अबल-अनाथ न रहने दें हम, छूटे साथ न रहने दें हम ।।

सुख को बांटे, दुख को बांटे, गड़ने दें न किसी को काँटे ।
ग्राम हितों में बाधक सारे क्रिया-कलापों को मिल छांटे ।।

वृद्धजनों का करें समादर छोटों के प्रति प्रेम दिखायें ।
सभी बराबर वालों को हम मित्र मानलें, प्रीत बढ़ायें ।।

रहे व्यक्ति बन शोभा घर की, घर मधुबन बन जाय ग्राम का ।
विकसित होगा ग्राम तभी जब, वही केन्द्र बन जाय काम का ।।

काम मांगने का हक देदे ग्राम सभा हर सक्षम जन को ।
रोजगार के स्रोत बढ़ाये, साधन सुविधा दे निर्धन को ।।

काम बढ़े जनशक्ति घटे तब मददगार हम पशु को मानें ।
पशु-पालन पर सदा ध्यात दें, पशु ऊर्जा की कीमत जानें ।।

पूरक पौरुष पशु हो जाये, ठाला बैठ न कोई खाये ।
और काम के अवसर आयें, तब पावर से हाथ मिलायें ।।

हो सहयोगी जब पावर तब उत्पादन है बढ़ता जाता ।
किन्तु मुख्य हो जाने पर वह पशुपालक सह पशु को खाता ।।

जहाँ अल्प जनबल पशुबल है वहीं जरूरी पावर बनता ।
जहाँ खूब जनबल पशुबल है वहाँ त्रस्त है उससे जनता ।।

पावर हमको ईष्ट तभी जब काम हमारा बढ़ जायेगा ।
रोज़ी रोटी जन पायेगा अर्जन करके ही खायेगा ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें उपार्जन अर्जक सारे ग्राम सभा से प्रोत्साहन पा।
शक्ति संतुलन सध जाने पर लोग बसेंगे गाँवों में आ॥

अधिकार-बोध

ग्राम सभाएँ स्वास्थ्य, सुरक्षा, भूमि-सिंचाई, जंगल देखें।
सौर-वायु-जल-गोबर-ऊर्जा उद्योगों के रख ले लेखे॥

ग्राम स्तरों के अधिकारी गण, रहें नियंत्रित ग्राम सभा के।
तभी प्रभावी गाँव बनेंगे, विकसित होंगे जन गाँवों में॥

ग्राम सभा के बलबूते से बाहर के हो काम जहाँ पर।
जिला परिषदें पूर्ण करें वे रहे संतुलन सदा यहाँ पर॥

सड़क, चिकित्सा, ऊँची शिक्षा, खेल कूद की स्पर्धा सारी।
जिला स्तरों पर हो जाने से नहीं किसी को पड़ती भारी॥

नहर, बांध, पुल, ट्रांसपोर्ट में रहे प्रान्त की साझेदारी।
करे व्यवस्था ऐसी जिससे हो न कहीं भी मारा मारी॥

केन्द्र समन्वय साधे सबमें, करे चौकसी नभ थल जल की।
देश-देश से मेल जोल कर सुध बुध लेता रहे निबल की॥

स्वभाव

भारतीय हम भले, भला ही चिन्तन, चर्या, चित्त चाहते।
चना चबैना गंगा जल-सा अपने खातिर वित्त चाहते॥

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम प्रतिपादक पंचशील के, नहीं चाहते रगड़ा झगड़ा।
नहीं चाहते दीन दुखी को, कहीं सताये कोई तगड़ा॥
जो निर्बल का भक्षण करता दुष्ट दशानन निपट छली है।
जो निर्बल का रक्षण करता कहलाता बजरंगबली है॥

आदर वीरों का भारत में, महावीर नित पूजे जाते।
मन मन्दिर के सिंहासन पर पर-उपकारी आसन पाते॥
यहाँ त्याग, तप, जप, कुर्बानी, दया-दानमय जीवन जीते।
किन्तु पंथ, लिपि, जातिवाद वश हुए लोग गुण गण से रीते॥

हमने बोया पेड़ आम का पर बबूल फल गया यहाँ पर!
ओझल आँखों से असली है, सब नकली चल गया यहाँ पर!
करने बैठे होम, हाथ के साथ सत्य जल गया यहाँ पर!
हरिश्चन्द्र, बलि, भीष्म, कर्ण को स्वयं धर्म छल गया यहाँ पर!

गाँधी की जय कहने वाले कहाँ बिताते सादा जीवन?
अन्दर काले, बाहर उजले घूम रहे हैं राष्ट्रभक्त बन!
दिन में दूना रात चौगुना बढ़ता जाता है काला धन।
रहे स्वदेशी कहाँ? विदेशी चाल ढ़ाल में फँसा आम जन॥

जीवन का स्तर उन्नत करना एक मात्र जब लक्ष्य हो गया।
आदर्शों का उठा जनाजा, मनुज मनुज का भक्ष्य हो गया।
लूटपाट को मिला बढ़ावा शोषणकर्ता हुए प्रतिष्ठित।
तेजोहत हैं शासन कर्ता, शिष्ट हो गये जहाँ तहाँ चित॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ अशिष्ट जन शिष्ट देश में झगड़े कर दंगे भड़काते।
भद्र नागरिक किसी बहाने झाँसे में ले, फाँसे जाते ॥

सत्याग्रह

हम झगड़ों की जड़ पहचानें,
राय किसी की गलत न मानें।
अनहित जानें, हित भी जानें,
सत्याग्रह की शक्ति पिछानें ॥

सत्याग्रह से सत मिल जाता, मुक्ति असत् से जन गण पाता।
रचनात्मकता कृति में आती, सहजीवन का खुलता खाता ॥

घृणा पाप से करे किन्तु जो पापी का भी बुरा न चाहे।
प्रेम पूर्ण प्रतिकार करे, वो सत्याग्रह की पाता राहें ॥

सत्याग्रह है युद्ध अहिंसक सत्याग्रही न होता हिंसक।
सत्याग्रह की शक्ति अनोखी, विजय दिलाती वह आखिर तक ॥

सत्याग्रह को शस्त्र बनाकर जिसने सात्त्विक तेज दिखाया।
राष्ट्र भक्त की प्रथम पंक्ति में उसने अपना नाम लिखाया ॥

राष्ट्र-भक्ति

राष्ट्र भक्ति की एक कसौटी—इस मिट्टी से प्यार करें हम।
विकसित होकर इस मिट्टी में मिट्टी की जयकार करें हम ॥

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वंदनीय है एक एक कण, जर्रा-जर्रा है जीवन-धन ।
प्राण वायु का दाता पल पल, नहीं बढ़ायें कहीं प्रदूषण ॥

बूँद-बूँद जल बहा व्यर्थ तो प्यासी जनता रह जायेगी ।
दाना-दाना नष्ट किया तो भूख न जनता सह पायेगी ॥

नहीं सहेजा तार-तार तो तन ढकने को वस्त्र न होंगे ।
अक्षम जनता के रक्षण हित अस्त्र न होंगे, शस्त्र न होंगे ॥

राष्ट्र भक्त की यही कसौटी—सदा काम वह सबके आये ।
अक्षमता जन-गण की हरने हाथ बंटाये, हाथ बढ़ाये ॥

पतित जनों को पावन करना, शरणागत के संकट हरना ।
जहाँ जरूरत पड़े राष्ट्र को, वहीं शौक से जीना मरना ॥

पुण्य भूमि ने हमें जगह दी, धर्म भूमि ने हमें फतह दी ।
कर्म भूमि ने कृति को शह दी, समरभूमि ने गीता कह दी ॥

व्यापक आशय वाला भारत डरा न लख आकार आसुरी ।
निर्भय होकर कृष्ण-कन्हैया रहे सुनाते सदा बांसुरी ॥

जो मन में है, वही वचन में, वही आचरण, वही तराना ।
शुभ दर्शन की लोक-चेतना राष्ट्र भक्ति का बनती गाना ॥

राष्ट्रभक्त हित यश अपयश क्या, हानि लाभ क्या अलग राष्ट्र से ।
रोम-रोम में बसा राष्ट्र तब रहे ख्वाब क्या अलग राष्ट्र से ॥

खंड-खंड को करे अखंडित, सहे अपंडित को सब पंडित ।
राष्ट्र-भावना से हो मंडित, राष्ट्र-देवता को पूजें नित ॥

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहु आयामी राष्ट्र एक है, नीति राष्ट्र की सद् विवेक है।
कोटि कोटि जन रहे नेक है, देश-प्रेम की यही टेक है॥

दैहिक, दैविक, भौतिक विपदा राष्ट्रभक्त सब मिलकर सहते।
जननी एवं जन्मभूमि को देव लोक से उन्नत कहते॥

हृदय-हृदय में अन्तर्यामी, भिन्न पिण्ड ब्रह्माण्ड नहीं है।
इसीलिए हर शख्स समझता स्वर्ग यहीं, अपवर्ग यहीं है॥

पढ़ना-लिखना

कथनी करनी का भेद मिटे इसलिए पढ़ाई करें सभी।
जन गण मन के सब खेद मिटे इसलिए पढ़ाई करें सभी॥

पढ़ने लिखने का मतलब है उपयोग वस्तु का करें सही।
हो लक्ष्य नहीं उपभोग मात्र जिससे शोषित हो जाय मही॥

हो संयोजित सब उत्पादन, विनिमय, वितरण की दिशा स्पष्ट।
जिससे अनपढ़ भी सीख सके किस तरह मिटेंगे सकल कष्ट॥

सहयोग बढ़े, उद्योग बढ़े, हर ओर योग के हो दर्शन।
इच्छाओं की पूर्ति करें पर, आपस में क्यों हो संघर्षण ?

जो घर्षण को टाल न पाते
साक्षर राक्षस बन जाते वे!
शिक्षित ही फिर समय-समय पर
शासित करते सुगम बोध दे॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षित होकर श्रीराम चलें संकट समाज का हरने हित ।
दधि मक्खन ले घनश्याम चले बल बुद्धि संचारित करने हित ।।

श्रीराम काम करते हैं जब बानर भालू जुट जाते हैं ।
घनश्याम काम करते हैं तब गो-बैल साथ में आते हैं ।।

प्रल्हाद कष्ट जब पाता है, नृसिंह प्रकट हो जाता है ।
यह मानव पशु का नाता है नर 'पशुपति नाथ' कहाता है ।।

मानव को पशु ने साथ दिया, पशु को मानव ने साध लिया ।
मानव पक्षी के साथ जिया, धोखा न प्रकृति के साथ किया ।।

तुलसी पूजी, पूजा पीपल, पर्वत नदियों का मान किया ।
छिति, जल, पावक, गगन, पवन का हर काल क्षेत्र में गान किया ।।

बोध परायण नर-नारायण आत्म-भाव को करें न सीमित ।
श्रमिकों के कंधों से उतरें, सुधियां लेवें कृषकों की नित ।।

जब किसान पढ़-लिख जायेंगे, जब जवान पढ़-लिख जायेंगे ।
पंडित जन की भाँति एक दिन बिना खटे, बैठे खायेंगे ।।

तब क्या होगा हाल शेष का ?
बगुले जैसे श्वेत वेष का ?
चंद जनों के सुख-विशेष का ?
संस्कृति पूजक हिन्द देश का ?

पठित जनों युग को पहचानो वरना अन्न न उग पायेगा ।
उत्पादन सब रुक जायेगा, भोक्ता किस किसको खायेगा ?

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्तव्यों को पहले जानो अवकाशों की सीमा मानो।
लंबित जिनके कार्य पड़े हैं उनका वर्तन धीमा मानो॥

जितना वेतन या सुख सुविधा यह समाज है सुलभ कराता।
क्यों बदले में उतनी सेवा देने से भी जी घबराता?

कम लेते, ज्यादा देते वे–राष्ट्र भक्त जन सेवक सारे।
ज्यादा लेते, कम देते वे–द्रोही, जन-गण के हत्यारे॥

जितने सेवा के सौदागर इस समाज में बढ़ते जाते।
अहित सेव्य का होता उतना दुर्गुण गहरी जड़ें जमाते॥

बिना काम के दाम ले रहे, खैर नहीं है उन लोगों की।
'वार्निंग पर वार्निंग' दे काम चोर का बदलेंगे जी॥

इस पर भी जो नहीं जगेंगे उनकी छुट्टी हो जायेगी।
दंभी द्रोही कामचोर की दाल नहीं अब गल पायेगी॥

नगर सभ्यता की यह माया

अभी शहर में बसने वाले समझ रहे यह बात नहीं है।
अफसर, बाबू, शिक्षक, नेता मानें तब तो रात नहीं है॥

शासन करने वालों की भी दृष्टि इस समय और कहीं है।
हवा महल बन रहे हजारों किन्तु किसी की नींव नहीं है॥

बिजली पर सब टिकी व्यवस्था बिजलीघर की हालत खस्ता।
जिम्मेवार न सिवा बिलों के बिजलीघर का कोई बस्ता॥

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोन किराया देना ही है, पड़ा रहे वह 'डेड' भले ही ।
ठीक न होगा, करो शिकायत चाहे 'ए' से 'जेड' भले ही ।।

'टिप' देकर के बात कीजिये, नहीं रुकेगा काम किसी का ।
अनुचर रावण के सरकारी क्या कर लेंगे राम किसी का ?

भ्रष्टाचार न खोजे मिलता, भ्रष्ट न कोई कहीं महकमा !
शिष्ट जनों के इर्द गिर्द ही जुड़ता जाता सारा मजमा !

बैंक, कचहरी, कार्यालय में अधिकारी गण गप शप करते ।
चलता रहता चाय पान है लोग टोकने से भी डरते ।।

हाजिर-नाजिर होने का वे अच्छा खासा वेतन पाते ।
देश-भक्ति के गाल बजाते बड़े ताव हैं उनको आते ।।

न्यायालय में चलो समय पर न्यायाधीश न मिल पायेगा ।
बिना वजह बतलाये मुंसफ देता 'तिथि पर तिथि' जायेगा ।।

इकतरफा हो जाय फैसला जिस दिन आप न रहें उपस्थित ।
न्याय-नीति है 'वन वे ट्रैफिक' मात्र समर्थों का सधता हित ।।

मास्टर साहब अगर पढ़ादें कैसे वे टयूशन पायेंगे ?
सभी विश्व विद्यालय वाले बिना पढ़ाये भी खायेंगे ।।

दवा बढ़ाने का डाक्टर अब पैसा खाना सीख गये हैं ।
बात लड़ाने का वकील सब पैसा खाना सीख गये हैं ।।

जब बुकिंग करवाने जाओ हर बाबू को नोट थमाओ ।
चपरासी की जेब गरम कर झूठे-सच्चे काम कराओ ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैसे वालों की मनमानी, याद दिलाती सबको नानी।
साधन-शुचिता बात पुरानी, हुए तिरोहित ज्ञानी ध्यानी ।।
स्कूल न जाते वही दौड़ कर लाते प्रतिमा सरस्वती की!
बुजदिल दुर्गा की पूजा कर हवस पूर्ति कर लेते जी की ।।
मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों की भीड़-भाड़ में धर्म खो गया।
पंडित, मुल्ला रूढ़ हो गया, आम आदमी मूढ़ हो गया ।।
'है' उसकी तो रही न कीमत, 'नहीं' उसी की करते व्याख्या।
प्रगतिवाद की खाल ओढ़कर किये जा रहे सारी आख्या ।।
सब कुछ है भी और नहीं भी नगर-सभ्यता की यह माया।
मायावी यह जगत आप ही गटर छोड़ सड़कों पर आया ।।
यहाँ खुली हड़तालें करना, बात-बात में देना धरना।
आग लगाना, बसें फूकना, रेल लूटना, काहे डरना ?
आज नहीं है क्या-क्या होता ? कौन नहीं मन ही मन रोता ?
किसी तरह जन इज्जत ढोता, डपट रहा दादा को पोता ।।
द्वन्द्व सभी ये तभी रुकेंगे, भारतीय जब काम करेंगे।
बिना काम के दाम माँगते, अन्तस्तल हर पल सिहरेंगे ।।
काम नहीं तो दाम नहीं लें, करें प्रतिज्ञा लोग हमारे।
काम नहीं तो दाम नहीं दें, करें नियोक्ता निश्चित सारे ।।
कर्तव्यों के वृक्ष फलेंगे, अधिकारों के फल झड़ेंगे।
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
एक दूसरे को बल देंगे, तभी चैन की निद्रा लेंगे ।।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँवों, कस्बों, नगरों एवं महानगर के वासी हैं हम।
कर्तव्यों को छोड़ कहाँ से अधिकारों में लायेंगे दम?

है अधिकार न ग्राम सभा के पंचायत तब किस मतलब की?
जिला परिषदें अक्षम सारी, प्रान्त करे क्या चिन्ता सबकी ॥

प्रान्त नहीं मजबूत, केन्द्र तब शक्ति कहाँ से ले आयेगा?
अधिकारों का भस्मासुर यह, जन-गण को ही खा जायेगा ॥

अधिकारों का दुरुपयोग कर अंग्रेजों ने भारत लूटा।
भारतीय जग गये तभी तो अंग्रेजों का उखड़ा खूंटा ॥

कर्तव्यों की याद दिलाने आजादी जन-गण ने पायी।
'पन्द्रह अगस्त सन् सैंतालीस' को भारतीय जनता हरषायी ॥

'छब्बीस जनवरी सन् पचास' में संविधान बन गया हमारा।
समता, ऋजुता, न्याय, बन्धुता लक्ष्य गान हो गया हमारा ॥

लोकतंत्र है अब भारत में,
हैं स्वतंत्र हम सब भारत में।
सभी यंत्र हैं अब भारत में,
नये मंत्र हैं अब भारत में ॥

अंग्रेजों ने शासन छोड़ा, राजा ने सिंहासन छोड़ा।
किन्तु लोक-हितकर्ताओं ने, ना राशन ना भाषण छोड़ा ॥

याद दिलायी जाती हरदम—हम सबकी है मालिक जनता।
जनता द्वारा निर्वाचित जन, जनसेवक या प्रतिनिधि बनता ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिनिधि तो है नाम मात्र बस ताम-झाम सब शासक का है ।
कुर्सी, जीवन-स्तर, सुख-सुविधा, नहीं-कहीं कुछ भी बदला है ।।
नहीं बदलने में धोखा है लोकतंत्र यों गुहराता है ।
अभी बदलने का मौका है जागृत जनमत दुहराता है ।।

अपने सपनों के भारत में

अपने सपनों के भारत में कर्तव्य परायणता आये ।
नहीं दीनता, नीति हीनता, मन को भाये, भ्रम फैलाये ।।
अपने सपनों के भारत में स्वाधीन रहें, हम शान्त रहें ।
पर निर्भर बन न कभी कोई, अप शब्द कहे, अप शब्द सहे ।।
जहाँ स्वावलम्बन हो बाधित, वहाँ परस्पर अवलम्बन लें ।
सर्वोत्तम का सृजन करें हम, सर्वोदय हित तन-मन-धन दें ।।
अपने सपनों के भारत में संकीर्ण जातिगत भेद न हो ।
कट्टरता से उपजा धार्मिक, संघर्ष, दंभगत खेद न हो ।।
घर, गाँव, नगर का उत्पादन, आर्थिक विकास का केन्द्र रहे ।
सबकी उन्नति का पैमाना, हर जगह पास का केन्द्र रहे ।।
रहे पड़ोसी भूखा जिनका, उनका विकास बेमानी है ।
रहें पड़ोसी नंगा जिनका, वे तो खुद ही बे पानी हैं ।।
हर विकास की रहे कसौटी—आश्रय हीन, अशिक्षित, रोगी ।
इज्जत वृद्धों-महिलाओं की मलिन बस्तियों के दुखभोगी ।।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभ कहाँ अन्तिम जन पाता ?
उसका हिस्सा कौन पचाता ?
कैसे 'तृतीय' बीच में आता ?
और वही अनिवार्य कहाता ?

चोर, लुटेरे, दगाबाज, ठग गलत कार्य में फंसते जाते ।
तज सामाजिक मर्यादाएँ पाप पंक में धंसते जाते ।।

अगर पड़ोसी उनको देखे उनके सुख दुख में हिस्सा लें ।
क्या मजाल जो गलत दिशा में एक कदम वे आगे धर दें ।।

है समाज का केन्द्र गृहांगन, परिधि पड़ोसी माना जाता ।
इन दोनों से संबल पाकर यह समाज वर्तूल बनाता ।।

सौ गोती सा एक पड़ोसी,
प्रतिपल रखता टेक पड़ोसी ।
अच्छा लगता नेक पड़ोसी,
हर लेता अविवेक पड़ोसी ।।

जाति, पंथ, लिपि, पक्ष भेद में, है अभेद की अविचल रेखा ।
मात्र पड़ोसी धर्म कि जिसका चमत्कार युग युग ने देखा ।।

जाति जाति में जब झगड़े हों, लड़े पंथ से पंथ जहाँ भी ।
लिपि, भाषा की जंग छिड़ी हो, दल 'दल दल' हो जाय वहाँ भी ।।

नजर पड़ोसी की पड़ते ही सकल नजारा बदला करता ।
साँचे में ढलने के बदले साँचा सारा बदला करता ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर आंगन से जुड़ा पड़ोसी, तंत्र नहीं है तथ्य चाहता।
घर आंगन से जुड़ा पड़ोसी, सहजीवन का सत्य चाहता ।।
होता अभिमुख तथ्य सत्य तब, क्रान्ति हुआ करती जीवन में।
संवादित जन जीवन होता, प्रकृति विहंसति परिवर्तन में ।।

परिवर्तन से अभिप्रेत है—चर्या में श्रम, शम (शांति) समता हो।
शिक्षण संयम, शील, समाधि, प्रतिपक्षी के प्रति ममता हो ।।
हो राजनीति सिद्धान्त परक, आनन्द अहितकर हो न कहीं।
प्रश्रय पायें क्यों स्पर्धाएं, रक्षित जिनसे जी जान नहीं ।।

अपने सपनों के भारत में हो ज्ञान, कर्म, अनुरक्ति, भक्ति।
अतिरेक युक्ति का हो न कभी, ऊर्जा सब को दे महा शक्ति ।।
भारत सोने की थी चिड़िया ऐसा इतिहास बताता है।
जग ने भारत से बहुत लिया ऐसा इतिहास बताता है ।।

भारत सोने की थी चिड़िया, चिड़िया न रही क्या वही आज ?
पीछे चिड़िया के लगा हुआ आता रहता क्यों सदा बाज ?
संकेत दिया शिवि ने हमको उस चिड़िया का रक्षण कर लें।
है घात लगाकर खड़े बाज जो चाह रहे भक्षण कर लें ।।

वे बाज नहीं तो क्या हैं जो, दौलत जन-गण की मार रहे ?
ले ले शोषण कर भूमि-भवन, निर्धन का भाग्य डकार रहे ।।
क्यों खेतों में खटने वाले वंचित खेतों से रहते हैं ?
क्यों बिना खटे खाने वाले मालिक अपने को कहते हैं ?

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खटे वही ले खेत ओर सब खेती की भी सुविधा ले ले।
कृषि कर्ता को ऋषि के जैसा निर्विकल्प निश्छल आदर दें ।।

खेती में हो काम नहीं तब,
ग्रामोद्योगों में लग जायें।
लघु उद्योगों में हिस्सा लें,
गाँव नगर सम्पन्न बनायें ।।

कृषक न सोचें अन्तस्तल में शहरों में जाकर बसने की।
मात्र पर्यटक बनकर जायें, स्वयं बदलने बहलाने जी ।।

ग्राम लक्ष्मी पर किसका हक है ?

जिनका मन रम जाय शहर में रोजी रोटी आश्रय पायें।
वे गाँवों की ग्राम सभा से स्वयं विदाई लेकर आयें ।।

गाँव छोड़ कर जायें उनके, घर आंगन पशु-खेत गाँव के।
वहीं सुलभ कर गाँव अन्य को, ग्राम वास का आमंत्रण दे ।।

शहरों के जो लोग गाँव में, हंसी खुशी से रहना चाहें।
उनका स्वागत करें स्नेह से, डाल गले में अपनी बाहें ।।

जिन परिवारों के सदस्य हों आधे आधे नगर गाँव में।
स्वेच्छा से वे ग्राम सभा को दौलत अपनी आधी दे दें ।।

दो नावों पर पैर रखेंगे, वे न सुरक्षित रह पायेंगे।
साथ-साथ वे भी डूबेंगे, जो कि बचाने को आयेंगे ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले गये जो गाँव छोड़कर, उनका क्या हक ग्राम लक्ष्मी पर ?
ग्राम न चारागाह नगर का, यही समझना है श्रेयस्कर ।।

गाँव छोड़ कर जो आ जायें, उनको शहरी जन अपनायें ।
ठौर ठिकाना ठीक दिलायें, दुत्कारे वे कही न जायें ।।

जो मिट्टी में रहे खेलते, कुश्ती लड़ते, दंड पेलते ।
वही नगर में मल ढकेलते, भाँति-भाँति के दुःख झेलते !

क्लब, कार्यालय, महल, इमारत, विद्या मंदिर बना रहे जो ।
फुटपाथों पर पड़े-पड़े ही क्या अंतिम दम तोड़ेंगे वो ?

जितने रिक्शे, तांगे, ठेले, ट्रक, ट्राली को खींच रहे हैं ।
खून-पसीना दे मालीवत् शहरी बगिया सींच रहे हैं ।।

सब अभिन्नतम अंग नगर के नगरपालिका इन्हें जगह दें ।
रचना करने वाले भी खुद सुविधाएँ दें, सुविधाएँ लें ।।

नगरपालिका करे नियोजन

मलिन घरों में रहे न कोई, बढ़े न गंदी-सी आबादी ।
नगरपालिका करे नियोजन, रोके नाना विध बरबादी ।।

सड़क-सफाई, बिजली, पानी, सीवर, शिक्षा-दीक्षा देना ।
नगरपालिका बिना न कोई चाहेगा यह जिम्मा लेना ।।

नगरपालिका सब देने हित, साधन अर्जित तब कर पाती ।
जब जनता कर्तव्य भाव से, ठीक समय पर टैक्स चुकाती ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुविधाएँ नित नूतन देना, नगरपालिका सदा चाहती ।
दुविधा जनता की हर लेना, नगरपालिका सदा चाहती ॥

नगरपालिका के अधिकारी, समझें अपनी जिम्मेदारी ।
जहाँ दिखायेंगे लाचारी, फैल जायगी वहीं बिमारी ॥

कार्य विमुख कुछ अधिकारी गण, जब तब जनता पर गुर्राते ।
गुर्राते ज्यों चोर, और हैं कोतवाल साहब थर्राते ॥

अधिकारी की मालिक जनता, सेवक जनता का अधिकारी ।
उलटी गंगा बहा-बहाकर बढ़ा, रहे जन संकट भारी ॥

अधिकारी सब वेतन लेते, जन कष्टों पर ध्यान न देते ।
सच्चाई पर डाल आवरण, कागज को ही नौका खेते !

क्यों अवैध घर बने नगर में ?
कूड़ों के क्यों ढेर लगाये ?
मलिन बस्तियां बढ़ी किस तरह ?
अधिकारी से पूछा जाये ॥

होती लीला राज मार्ग पर, बिठा ताजिया मार्ग रोकते ।
गाय-भैंस जन-पथ पर बंधती, लगी गुमटियां, नहीं टोकते ॥

रास्ता, रिक्शाघर बन जाता, चौराहा बन जाता मंडी ।
बीच सड़क में भैंस बांधते, कौन दिखाता इनको झंडी ?

काम नहीं अधिकारी करते, पर जुर्माना करते भारी ।
उनके आगे व्यर्थ दिखाती भोली जनता ही लाचारी ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारी कर देने वाले, अधिकारी कर लेने वाले।
लेता ही कहता देता के, खाते झूठे, करतब काले!
दबता है देता लेता से, मार रहा है लेता ठोकर।
मालिक भरता है जुर्माना, जुर्माना करता है नौकर!
जुर्माना करने से पहले अधिकारी निज फर्ज बजायें।
जुर्माना भरने से पहले भला बुरा समझें/समझायें॥
नगरपालिका की आँखों में, धूल झोंकना बंद कीजिये।
निजी स्वार्थ हित नगर-नियति का, भंग न कोई छंद कीजिये॥
अधिकारी हों अच्छे, सच्चे, रहे नागरिक नगर-डगर में।
नगरों को विकसित करने हित, सब उत्साहित हो हिस्सा लें॥
नगरपालिका भवन भूमि के,
क्रय विक्रय पर रखे नियंत्रण।
न्यायपालिका सही गलत का,
मौके पर दे निर्णय तत्क्षण॥
न्याय-प्रक्रिया सरल बनाओ, अधिकारी बन मत इठलाओ।
कर दाता को पेंशन देकर, कर देने का भाव बढ़ाओ॥
स्कूल बना देंगे करदाता, अस्पताल में देंगे साधन।
और धर्मशाला के खातिर, दोनों हाथों से देंगे धन॥
सड़कें उनके नाम बनाओ, आम जनों के काम बनाओ।
शासनकर्ता व्यापारी बन, मत दोनों के दीन गँवाओ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीन महाजन को मत मानो, दीन महाजन को मत मानो ।
महाजनी की अस्मत जानो, महाजनों का पंथ पिछानो ।।
जिम्मेवारी सौंपो जन को, जिम्मेदार बनाओ मन को ।
नगर-हितों से जोड़ो जन को, जोड़ो मन को, जोड़ो धन को ।।

अपहृत करें न साधन-सुविधा

धन के बल पर धरा धाम ले, प्राप्य छीनते जो औरों का ।
अपहृत करते साधन-सुविधा, बंधु कहें उनको चोरों का ।।
क्यों गाँवों में रहने वाले, शहर-शहर में भवन बनाते ?
खाली घर पर लटका ताले, शहर-शहर में भवन बनाते ?

घर रहते, घर लेने वाले, बेघर औरों को करते हैं ।
प्राप्य दूसरों का हरते हैं, रोष विपन्नों में भरते हैं ।।
नहीं गाँव में रहने वाले, शहरों में घर प्राप्त करें अब ।
शहरी भी लें—घर रहते घर, ऐसी प्रथा समाप्त करें अब ।।

एक देश है, एक जगह पर, मन के माफिक महल बनाओ ।
जगह-जगह मत भूमि खरीदो, दस मुख से मत माल उड़ाओ ।।
दौलत बढ़ने पर जिसने भी, जहाँ नये घर-द्वार बनाये ।
गृह-प्रवेश के साथ पूर्व घर, नगरपालिका का हो जाये ।।

नगरपालिका के अधिकारी, नहीं सृजन में रुचि दिखलाते ।
समाधान के सूत्र न पाते, नक्शों पर ही कलम चलाते ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये नये आवास बनाते, वे सब धनपति ही हथियाते ।
बेघर मुश्किल से घर पाते, अधिकारी नाहक बतियाते ॥
गाँव नगर में घर हो जिसका, वह न कहीं भी और जगह ले ।
पूर्ण ध्यान दे नगरपालिका, जब कि किसी जन को कब्जा दे ॥
रोगों की पहचान न जिनको वे हकीम लुकमान बन गये !
रोगी की प्रिय जान न जिनको वे डाक्टर गुणवान बन गये !
अधिकारों का बोध न जिनको वे अधिकारी बन बौराये ।
मेवा सेवा का हथिया कर, मुख-मंडल पर रौनक लाये ॥
बढ़ी अचल चल संपत्ति जिनकी, वे अपना अन्तर टंटोलें ।
प्राप्य दूसरों का लौटाने, अपने-अपने ताले खोलें ॥
कल्कत्ता, मद्रास, बंबई, दिल्ली, जयपुर, पटना बस लें ।
एक शहर को छोड़ शेष सब भूमि भवन स्वेच्छा से दे दें ॥
भूमिदान के आन्दोलन से पाठ सभी को यही मिला है ।
सहजीवन की सहज कसौटी संस्कृति की आधारशिला है ॥

भूमिहीन को भूमि दीजिये,
बेघर को आबाद कीजिये ।
साधनहीनों को दे साधन-
सबके आशीर्वाद लीजिये ॥

सोचे गाँवों की ग्राम सभा, देखे नगरों को नगर सभा ।
दायित्व जहाँ हो पूर्ण नहीं जिसका करती परिपूर्ण प्रभा ॥

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियत जगह में लक्ष्य बद्ध हो, करे व्यवस्थित जन उत्पादन ।
उत्पादक का हित न गौण हो, उत्पादक बन जाय न साधन ।।

उत्पादक को उत्पादन दो, उत्पादन में सब हिस्सा लो ।
हिस्सेदार न हो जाये वो, करे अनुत्पादक धंधा जो ।।

ठेके, जुए, ब्याज, दलाली, हर लेते जन-जन की लाली ।
ऐसी दुर्बलता क्यों पाली; जिससे होती जेबें खाली ।।

व्यसन बढ़ा के क्या पायेंगे, यादव यादव को खायेंगे ।
मायावी मृग भरमायेंगे, रक्षित धन-जन लुट जायेंगे ।।

जिन धंधों से लुटती जनता, बढ़ते जाते नित अपराधी ।
भ्रष्टतंत्र का जाल फैलता, होती भारत की बरबादी ।।

क्यों ऐसे सब धंधे चलते ? किनका ये बल पाकर फलते ?
कौन नराधम उनसे पलते, जिनसे जन-धन-साधन जलते ?

यह है चोरी सीनाजोरी, लाइसेन्स लेने वालों की ।
अफसर, मंत्री, सचिव सहित सब, लाइसेन्स देने वालों की ।।

ग्रामसभाएँ तय करलें तब, रुक सकते ये गोरखधंधे ।
नगरपालिका सक्षम हो तो लोग स्वार्थ में क्यों हो अंधे ?

महापालिका मेल बिठाकर जन कष्टों से त्राण दिलाये ।
हिस्सेदारी लोग दिखायें पराधीनता कहीं न आये ।।

आर्थिक सामाजिक क्षेत्रों में जनपद परिषद सजग रहेगी ।
तभी विधानसभा या संसद, सहज सुधारों पर बल देगी ।।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिनिधियों पर जनता का क्या कहीं जरा भी अंकुश लगता ?
मतदाता में कहाँ सजगता ? मतदाता को प्रतिनिधि ठगता !

मापदंड होवे वेतन का

जन प्रतिनिधि हो जहाँ जहाँ के, वहाँ वहाँ से वेतन पायें ।
यात्रा भत्ता सुख-सुविधा का ब्यौरा जनता को बतलायें ।
आय वहाँ की औसत हो वह, मापदंड मानें वेतन का ।
इससे ज्यादा प्रतिनिधि लें तो दुरुपयोग है जन के धन का ।।

सभी स्तरों के प्रतिनिधियों के वेतन की हो यही कसौटी ।
जन-जीवन के स्तर से हटकर नहीं बिठायें सेवक गोटी ।।
जितनी सुविधा दें जनता को, उतनो ही वे भी सुविधा लें ।
अधिक अपेक्षा रख करके वे, क्यों नाहक खुद को धोखा दें ?

जन रहते हैं यहाँ गाँव में, बैठ न पाते कभी छांव में ।
भूखे, नंगे, रोगी, कोढ़ी, रिस-रिस आता खून पांव में ।।
मुश्किल से दो रोटी खाते, नये वस्त्र उनको ललचाते ।
कोसों तक चल चल कर आते, नून, तेल, जल, लकड़ी पाते ।।

जाड़ा, पाला, कोहरा सहते, सहते गरमी लू ऊमस हैं ।
आंधी वर्षा, अनावृष्टि के आगे रहते वे बेबस हैं ।।
उन लोगों के प्रतिनिधि अपना मुखड़ा देखें खुद दर्पण में ।
छोड़ें थोथे गाल बजाना, विधि-विधान की आड़ नहीं लें ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताप नियंत्रित महलों में क्यों, लुटा रहे वे जनता का धन ।
जुटा रहे जो निर्बल-निर्धन, लुटा रहे वे जनता का धन !

कौन बैठता बस में आगे, आरक्षित हैं सीटें किसकी ?
घुसे रेल में जनता कैसे, जो कहलाती मालिक इसकी ?

प्रतिनिधि बैठे जगह-जगह पर, ऐंठे बैठे उनके नौकर ।
दिखा-दिखा कर रोब साहबी, मार रहे मालिक को ठोकर ।।

खून पसीने का पैसा दे टिकट ख़रीदा जिस जनता ने ।
कदम-कदम पर उसे सुनाते प्यादे ही बढ़ चढ़कर ताने !

मुफ्त पास ले कर मत भूलो, मूल्य कौन है उसका देता ?
किसकी कुर्बानी के चलते सुविधाभोगी सुविधा लेता ?

सेवा का दम भरें न ज्यादा

होता जब जल-विप्लव भारी, दुख में रोती जनता सारी ।
मात्र हवाई सर्वेक्षण कर, ये बन जाते पर उपकारी ।।

अस्पताल है जनता के हित, जनता कितनी औषध पाती ।
यह जमात ही चुपके-चुपके औषध सारी है हथियाती ।।

शल्य चिकित्सा करवाने को यही विदेशों तक जाते हैं ।
मर कर लाशें ढुलवाते हैं, जलने गड़ने को आते हैं ।।

एक लाख का जिन्दा हाथी सवा लाख का होता मरकर ।
यही हाल जन-नेताओं का जिनसे होता भारत जर्जर ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निजी क्रियाएं लाद रहे हैं, आज राष्ट्र पर सारे नेता।
लगते सुन फरियाद रहे हैं, आज राष्ट्र के प्यारे नेता।।
मन्दिर मस्जिद में वे जाते, गुरुद्वारों में शीश झुकाते।
आज्ञापालक हैं इतने जो—कोड़े खा, जूते चमकाते।।
पूजन अर्चन करने का भी मूल्य देश से उनको मिलता।
'हल्दी लगी न लगी फिटकरी' किन्तु रंग है चोखा खिलता।।
जनता दिन-दिन दुबली होती, व्यवसायी को होता टोटा।
अंगुलियाँ सब घी में रखकर, हर नेता हो जाता मोटा।।
अपनी ताकत से उपजाओ, ताप नियंत्रित महल बनाओ।
मौज-मस्तियाँ करना चाहो, तो, जन सेवक, मत कहलाओ।।
सेवक होते यदि सुविचारी, बिगड़ न पाते तब अधिकारी।
दो नम्बर का काम न होता, होती कहीं न मारा मारी।।
मीठा मीठा गप्प और सब, कड़वा थू थू करने वाले।
बैठे अस्मत ले समाज की, सेवा का दम भरने वाले।।

रेलों में क्या ? लूट राज है।
बस वाले क्या ? बद मिजाज हैं।
खुराफात हर ओर आज है।
अनगिन पैदा हुए बाज हैं !

मौका खाने का मिल जाये, उस विभाग का हाल न पूछो।
आँख मूंद बन बैठी अंधी, उस जमात की चाल न पूछो।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर, नीचे, इधर, उधर, सब, बांट रहे हैं अंधी इन्कम।
रोड़ा बनने वालों को वे, लेने देते कहीं नहीं दम ।।

दम वाले ही रहते तो फिर, बनते ही क्या बाँध टूटते ?
पुल ढह जाते, पशु बह जाते, निरपराध के भाग्य फूटते ?

क्यों निर्माण न होता अच्छा ?
जान रहा है बच्चा-बच्चा।
राष्ट्र तभी है खाता गच्चा,
जनसेवक जब रहे न सच्चा ।।

सेवक सब शासक बन बैठे !

पढ़-पढ़ कर अंधेरी नगरी चौपट राजा की आख्याएँ।
सेवक सब बन बैठे शासक, जनता रोये या रिरियाए ।।

आजादी है जन-प्रतिनिधि को सैर-सपोटे की भी पूरी।
प्रांत पचीसों ने पटवा दी, दिल्ली की भी सारी दूरी ।।

जनता अपने प्रतिनिधियों को, भेजा करती है चुन-चुन कर।
वे बन वफादार दरबारी, काट रहे दिल्ली के चक्कर ।।

दिल्ली वाले डाँट-डपट कर, हरदम अपना रोब दिखाते।
कभी उठाते, कभी बिठाते, कभी रुलाते, कभी हंसाते ।।

भीड़ जुटाते ये दरबारी, जय जय नेता की करने को।
तब मुसकाकर नेता देता, उनको रोटी के टुकड़े दो ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमिट, कोटा, पेंशन, पदवी जैसी नाना सुविधाएँ दी।
टुकड़े पाने वालों ने भी अपनी अपनी झोली भर ली ।।

निर्वाचित जन-प्रतिनिधि सेवक, नेता जी बन रंग दिखाते।
अफसर, साहब, पेशकार कुछ छुट-भैयों के ढंग दिखाते।

कभी कहेंगे उठो! गरीबी दूर हटाने आगे आओ।
है 'आराम हराम' न बैठो फसलें खेतों में उपजाओ ।।

जनता की विधि हैं ये प्रतिनिधि

खट-खट कर मरने वालों के निरा निखट्टू हैं जन प्रतिनिधि।
मीठे मोदक खाने वाले बन बैठे हैं जनता की विधि ।।

सात दिनों का हफ्ता था वो, हुआ आज है दिवस पाँच का।
कार्य दिवस भी छः घंटों का, डर न किसी को साँच आँच का ।।

मजदूरी निशि-वासर करती उस जनता के ही अधिकारी।
छुट्टी पर हैं छुट्टी लेते और ऐंठते वेतन भारी ।।

कोई भी कृषि करने वाला, नहीं सवेतन छुट्टी लेता।
अनुपस्थित दिन की मजदूरी, कहाँ कौन सा मालिक देता ?

पर, हुजूर तो एक साल में सवा महीना औसत खटते।
सुविधाएं उस पर भी अनगिन, इधर उधर से रोज झटकते ।।

प्रबल प्रतापी अधिकारी गण, बैठे प्रतिभा से आँख फिरा।
हर सतोगुणी अस्वस्थ हुआ, जो उठा वही तत्काल गिरा ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहते विधिविद् के हुआ पतन, रहते विधिवंद् के लुटा वतन ।
विधिविद् संगी उन लोगों के, जिनका जनता से अलग अमन ।।

अपने भारत में अमन रहे, कहने से अमन नहीं रहता ।
अभिमुखता छोड़ विमुख जल में, बहने से अमन नहीं रहता ।।

अंधों लंगड़ों का न्याय आज, अन्याय बन गया भारत में ।
अनपढ़ समाज हित राज काज, अन्याय बन गया भारत में ।।

क्यों श्रम का मूल्य समान नहीं ?

हर पढ़ा लिखा यह बतलाये क्यों श्रम का मूल्य समान नहीं ?
नाई, वकील, मजदूर, वैद्य, कारीगर की सम जान नहीं ?

बातों का मान करें लेकिन, हो हाथों का अपमान नहीं ।
अवमूल्यन करके श्रमिकों का, श्रम का गायें गुण गान नहीं ।।

होते बालिग सब समझदार, अपना अपना मत देते हैं ।
मत दाता का मूल्य बराबर मान, सभी मत लेते हैं ।।

एक वोट के अन्तर से जो, हार रहे हैं उनको देखें ।
नोटों चोटों के मन्तर से, मार रहे हैं उनको देखें ।।

हर वोटर ले सकता शिक्षा,
न्याय मांगने का हक पूरा ।
मात्र परिश्रम का उसको क्यों,
दिया जा रहा मूल्य अधूरा ?

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकतंत्र में तंत्र लोक है

लोकतंत्र में तंत्र लोक का गला दबाना बंद करे अब ।
स्वत्व लोक पहजाने जाने फूंक-फूंक कर कदम धरें सब ।।

ब्याज, टैक्स, ऋण, मुद्रा, सेना—हैं हथियार तंत्र के भारी ।
दान, दया, तप, त्याग समर्पण, रही लोक को सेवा प्यारी ।।

रहे विकेन्द्रित कला कुशलता, धन-साधन भी रहे न केन्द्रित ।
वे सब अति केन्द्रित होने से लोक तंत्र में टकराते हित ।।

उद्योगों में हुई क्रान्ति पर कितना पाया सुख उत्पादक ?
कितना लाया घर उत्पादन ? निर्णय लेने में कितना हक ?

जब सामाजिक परिवर्तन का शंख फूँकता लोक हमारा ।
उत्कट सत्ता लिये तंत्र तब बन जाता पथ-रोक हमारा ।।

शोषण शासन के पाटों बिच पिसी जा रही भोली जनता ।
पीस रहा है तंत्र जोकि खुद जन-जीवन का रक्षक बनता ।।

रक्षक भक्षक कहलायेंगे जब तक है केन्द्रित उत्पादन ।
बिना विकेन्द्रत उत्पादन के नहीं स्वरक्षित होता जन-जन ।।

जन-जन का हित जनता के हित, जनता द्वारा हो उत्पादन ।
उपभोक्ता ही रहे केन्द्र में, मुख्य नहीं हो लाभ उपार्जन ।।

केन्द्रित भारी उद्योगों से कुछ ही का सध सकता हित है ।
बहुसंख्यक सुख वंचित रहते संभावित हित अधिक अहित है ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली घर का तंत्र देख लो उजियाला जब चाहा रोका।
सहसा जल कल की टंकी से कौन नहीं है खाता धोखा ?

बड़े बाँध से आशंकित है गाँव नगर जनपद की जनता।
गैस-रिसाव सा दुखद हादसा किन लोगों के कारण बनता ?

पूँजी निवेश की तुलना में—छोटे उद्यम अति उपकारक।
परिवेश-शेष की तुलना में—मोटे उद्यम अति अपकारक॥

मिलती भारी उद्योगों में नौकरियाँ जिन-जिन लोगों को।
यंत्र तंत्र के पुर्जे बन कर फैलाते वे हां रोगों को॥

बड़े बड़े उद्योग मात्र हैं—दस प्रतिशत जन गण की आशा।
नब्बे प्रतिशत लोगों की वे करते मुखरित घोर निराशा॥

दस प्रतिशत के बलबूते पर खड़ा तंत्र टिक जाता शासन।
कई गुना दब जाता उससे अपने अन्तर का अनुशासन॥

अन्तर है शासन जनता में

नहीं जोड़ने में क्षम शासन, जन न चाहते कहीं तोड़ना।
शासन समझे 'हाथ छोड़ना', जनता जाने हाथ जोड़ना॥

लाठी डंडा बल शासन के, शासक का बल है—डर खाली।
निर्बल जन का राम नाम बल और शस्त्र हैं—दो कर खाली॥

हृदय हीन है शासन, जनता हृदयवान, गुण-खान, विवेकी।
सदा जनार्दन की छवि जन में शासनकर्ताओं ने देखी॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासन पर ही अवलम्बित हो क्रियाहीन जन बन जाते हैं ।
दैहिक, दैविक, भौतिक संकट उमड़ घुमड़ कर तब आते हैं ॥

शासन में वह शक्ति कहाँ जो जनता जितना काम कर सके ?
शासन में वे व्यक्ति कहाँ जो दैवों का रथ जाम कर सकें ?

जनता है हनुमान कि जिसको स्वयं शक्ति का नहीं भान है ।
'का चुप साधि रहेउ बलवंता' कहे कहाँ वो जाम्बवान है ?

जब विस्मृति भी स्मृति बन जाये,
रूप रंग शत गुना दिखाये,
नयन न अर्जुन के चुंधियाये,
विश्व-रूप धर काम बताये ॥

तिथि
पु.सं. २६५२
भारती पुस्तकालय

विश्वचित्त ही अनुभव करता—एक देह में रहता हूँ मैं ।
सरिता-जल-सा सदा प्रवाहित इस समाज में बहता हूँ मैं ॥

जगती मुझमें प्रतिबिम्बित है, मेरी छवि से सब जगमग हो ।
जिनको छू लूं अपने कर से, कंकर शंकर बन जायें वो ॥

सागर-मंथन से कालकूट निकले तो शिव बन पीना है ।
जग को जीवन का संबल दे सत् चिदानंदमय जीना है ॥

संहार नहीं, सब सृजन करें, हर ओर रहे निर्माण नया ।
शिशुओं का लालन-पालन हो, मरणोन्मुख पायें प्राण नया ॥

सेवा रोगी को मिले सही आदर वृद्धों का पूरा हो ।
सार्थक सपने हों जायँ सकल देखा करती नव पीढ़ी जो ॥

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह है भारत की फुलवारी

तजें न कुल के लिये किसी को, कुल गाँव नगर हित तजे नहीं ।
जनपद प्रदेश या देश हेतु निष्क्रिय बनकर हरि भजें नहीं ।।

भजने वाले हैं यहाँ बहुत वैदिक-हिन्दू, जैन, बौद्धजन ।
सिक्ख, पारसी, मुस्लिम, ख्रिस्ती कहाँ शुद्ध है इन सबका मन ।।

सभी जानते-भूमि बहुत कम आम आदमी पा सकता है ।
कई मंजिलों के भवनों में जन गण नहीं समा सकता है ।।

मगर घेर कर धरा हमारी सब धर्मालय बना रहे हैं ।
जख्मी जिन्दों को कर कर के जलसे कब्रों पर मना रहे हैं ।।

श्रम दिवसों की घोर अवज्ञा इनके द्वारा की जाती है ।
छुट्टी नाना अवसर की भी इनके द्वारा ली जाती है ।।

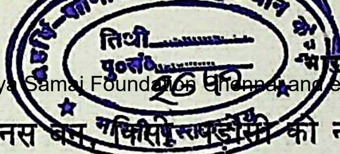
बीच सड़क में करते लीला कभी ताजिया धर देते हैं ।
बात-बात में लड़-भिड़ करके कलम सरों की कर लेते हैं ।।

दूरभाष पर शोर मचाते, जब्बरन अपना राग सुनाते ।
आम जनों पर आफत ढ़ाते, देश-शेष को समझ न पाते ।।

दया क्षमा की बात करेंगे, पीछे से ये घात करेंगे ।
दिन रहते भी रात करेंगे, पता नहीं कब प्रात करेंगे ।।

जो ग्रंथ, पंथ से चिपट गये, वे सत्य सनातन क्या जानें ?
जिनके चित पर जड़ लिपट गये, बेसुध अपने को वे मानें ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें भलाई भलमानस बन, किसी पड़ोसी को न सतायें।
एक दूसरे का हित चाहें काम परस्पर सबके आयें॥

पशु पक्षी के साथ प्रकृति भी सहजीवी बन जाय हमारी।
ताकि प्राकृतिक संपत् सारी होवे विघ्न विनाशन हारी॥

जीव निष्ठ जीवन-निष्ठा वश, जब अमित्रवत करें आचरण।
तब बदले की जगह समझकर लाना है बदलाव विलक्षण॥

साधन विशुद्धि हो साध्य शुद्धि, अविरोधि श्रम करें, करायें।
अच्छे जितने हैं उससे भी और अधिक बन अच्छे जायें॥

व्यक्ति क्या, व्यक्तित्व बोल दे–जयभारत, जय भारत माता।
भारतीयता से जन गण का रहे देह देही वत नाता॥

ग्राम धर्म का मुख्य कार्य है—व्यथा वाट, विश्वास बढ़ायें।
संवर्धित कर ग्राम शक्ति को, दु:ख दैन्य संत्रास मिटायें॥

नगर धर्म की मर्यादा है—सहजीवन को रखें निरापद।
शोषण शासन पर अंकुश रख, नहीं किसी को होने दें बद॥

राष्ट्रधर्म है—सहमति सबकी
रखें परस्पर पूरक सबको।
व्यक्त पंच परमेश्वर में ही
भारत ने देखा है रब को॥

भारतीयता की परिचायक राष्ट्रपताका अपनी फहरे।
राष्ट्रधर्म को पूर्ण मान दें भक्ति-सलिल में उतरें गहरे॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकल देश का मूल मंत्र है,
'जहाँ सुमति तह संपति नाना।'
सकल देश का शूल तंत्र है,
'जहाँ कुमति तह विपति निदाना ॥'

ग्राम, नगर, घर, देश, विश्व की सहमति के हों बिन्दु सुनिश्चित।
मिलें पुनः, पुनः मिल बैठें, जहाँ कहीं भी टकरायें हित ॥

जन, विद्वदजन, उद्योगी जन, साधक, शासक चलें साथ में।
लड़ना छोड़ें बात-बात में, साथी बन लें हाथ-हाथ में।

कोटि हाथ जब हिन्द देश के धरती का शृंगार करेंगे।
स्वयं सृजन बन हिन्द-निवासी त्रिभुवन का भय भार हरेंगे ॥

बोलें हम 'जय ग्राम' जोर से और कहीं 'जय हिन्द' पुकारें।
'जय मानव', 'जय जगत्' उचारें, रहे संतुलित कर्म हमारे ॥

सुमति, सृजन, अभिमुखतामूलक
भारतीयता मंगलकारी।
स्वयं सुरभिमय हो जा 'साधक'
यह है 'भारत की फुलवारी' ॥



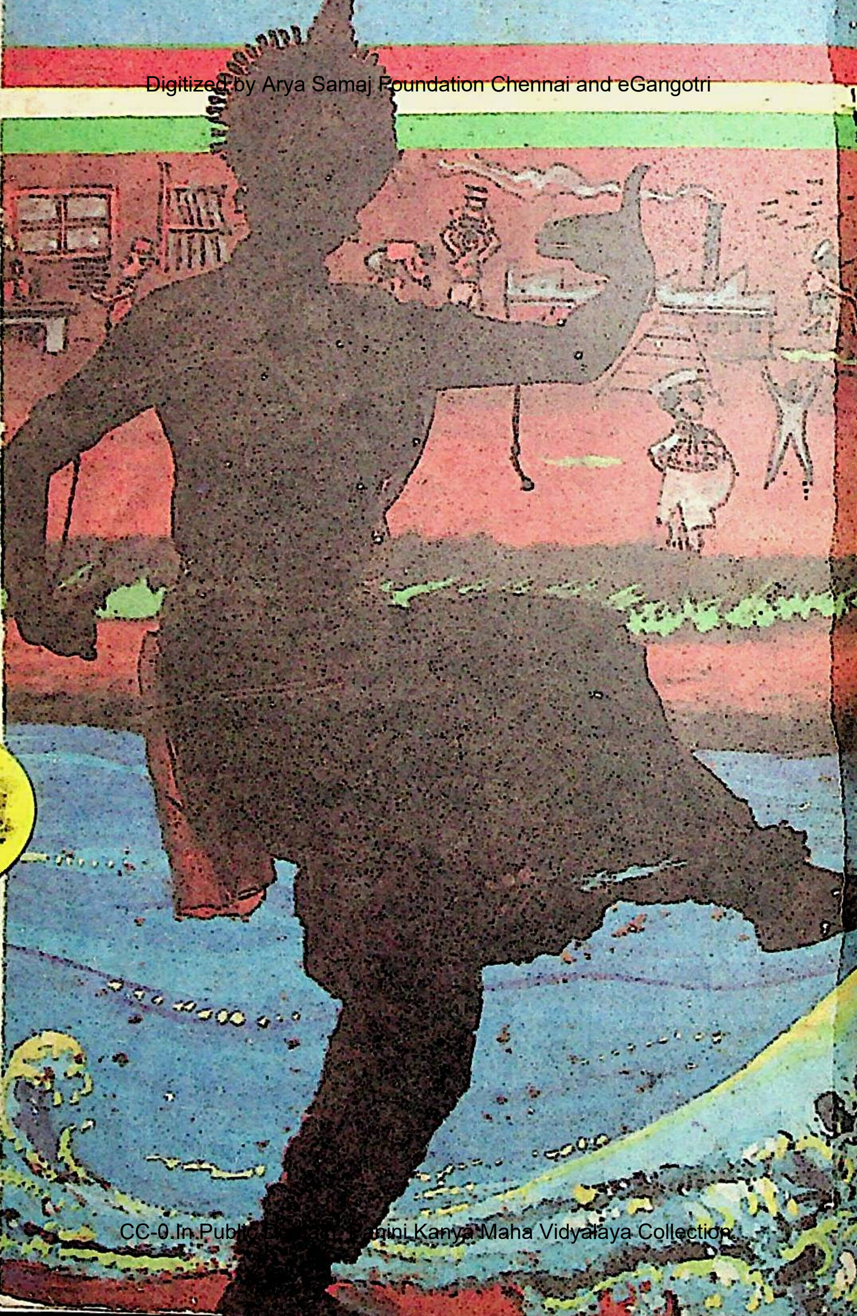
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.